RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 10	अंक : 12	मुम्बई, मार्च 2021	पृष्ठ : 36	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 10	ISSUE : 12	MUMBAI, MARCH 2021	PAGES : 36	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2547

श्री पार्श्वनाथ जिनालय, आचार्य भगवन श्री कुंदकुंद स्वामी की साधना भूमि, कुंदाद्री, जिला शिमोगा (कर्नाटक)

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रूपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रूप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संग्रहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	राजकुमार जैन	सतीश चन्द जैन SCJ	नरेश जैन (कामधेनु), दिल्ली	अनिल जैन	मुकेश जैन	राकेश जैन	राजेन्द्र जैन
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाऊंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550

आज दिगंबर जैन समाज में एकता और एकजुटता की महती आवश्यकता है

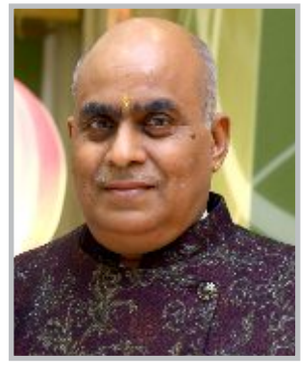

भारतवर्ष में दिगंबर जैनों की अनेक राष्ट्रीय संस्थाएँ हैं और ये सभी संस्थाएँ अपने अपने क्षेत्र में कार्य कर रही हैं पर ये संस्थाएँ अखिल भारतीय दिगंबर जैन समुदाय के हितों के संरक्षण के लिए प्रशासनिक व शासन के स्तर पर दबाव नहीं बना पाती हैं जबकि अन्य धर्मों के लिए कार्यरत संस्थाओं की सुनवाई हर सरकार करती है, चाहे वह राज्य सरकार हो या फिर केंद्र सरकार।

अन्य मतावलंबियों के प्रमुख तीर्थक्षेत्रों पर व्यवस्थाओं को उस मत विशेष के सिद्धांतों व नियमों के अनुरूप रखा जाता है जैसे स्वर्ण मंदिर के आसपास कई किलोमीटर तक शराब की बिक्री व सेवन पर प्रतिबंधित है, मांसाहार पर रोक लगी है। स्वर्ण मंदिर के लिए देश के कोने-२ से रेलें संचालित होती हैं, विमानतल की सुविधा है। यह तो केवल एक उदाहरण है, ऐसा अनेक स्थानों पर देखा जाता है। सभी धर्मावलंबी किसी न किसी रूप में शासन- प्रशासन पर दबाव बनाते हैं और उनका काम हो जाता है परंतु दिगंबर जैन धर्मावलंबियों की उपेक्षा बड़े पैमाने पर हो रही है। हम आज तक सम्मेद शिखरजी जैसे शाश्वत सिद्धक्षेत्र पर शराब, अंडा और मांस आदि को प्रतिबंधित नहीं करा सके हैं क्योंकि कहीं न कहीं सरकारें जैन समाज के प्रति उदासीन हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि हम सभी में एकजुटता की कमी है और हम पंथवाद में निरंतर उलझते जा रहे हैं। किसी भी मंच पर हम एक होकर खड़े नहीं हो पाते हैं। जिस दिन देश की समग्र दिगंबर जैन संस्थाएँ अपने आपसी मतभेदों को भुलाकर एक मंच पर खड़ी हो जाएँगी, तब देश की हर सरकार हमारी बात पर ध्यान देगी।

मेरा विचार है कि हमें एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम बनाकर आगे बढ़ना चाहिए, जो भी आपसी मतभेद के विषय हैं उन्हें अलग कर दिया जाए और जहाँ हम आपस में सहमति बना सकते हैं, वहाँ आपसी सहमति बनाकर आगे बढ़ें। पंथवाद में मूल भेद पूजा पद्धति का है तो हम अपनी-२ पूजा पद्धति को अपने तक सीमित रखें।

राष्ट्रीय मंच पर जब हमें अपने दीर्घकालिक हितों का संरक्षण करने के लिए अन्य किसी संगठन या फिर किसी समुदाय का सामना करना हो या सरकार के सामने अपनी बात रखनी हो तब हमें एकजुटता का परिचय देना होगा, वर्तमान समय की यह माँग है वर्ना हम पिछड़ते जाएँगे। हम कितना भी ढोल पीट लें कि जैन समाज देशभर में सबसे अधिक आयकर देता है, सबसे अधिक दान देता है। इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

आज एक समुदाय विशेष का तुष्टिकरण करने, उस समुदाय को सरकारी सुविधाएँ देने के लिए राजनीतिक दल लालायित रहता है क्योंकि वे सब एकजुट हैं। एक आवाज पर अपने समुदाय के छोटे से छोटे-२ व्यक्ति के लिए सड़कों पर निकल पड़ते हैं। उनकी बात हर सरकारी विभाग और हर सरकार को सुननी पड़ती है यहाँ तक कि निजी कंपनियों को भी अपनी नीतियाँ उस समुदाय के हितों का ध्यान रखकर बनानी पड़ती है। हमें भी ऐसी ही एकता और एकजुटता की आवश्यकता है। दिगंबर समाज में एकजुटता की बहुत कमी है, हम पंथवाद के मतभेद में अपने मूल धर्म को भूलते जा रहे हैं, हमारे बीच आपसी दूरियाँ बढ़ रही हैं, हम केवल पंथ को मूल मानकर चल रहे हैं। इस बिखराव के कारण अन्य मताबलंबी हम पर हावी हो रहे हैं, हमारे आपसी बिखराव का वे फायदा उठा रहे हैं इसलिए आज हमें एकजुट होने की महती आवश्यकता है अन्यथा हम पिछड़ते चले जाएँगे, हमारे तीर्थ हमसे दूर हो जाएँगे, हम उन्हें बचा नहीं सकेंगे।

इस समय दिगंबर जैन समाज की राष्ट्रीय संस्थाओं में "भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी" पंथवाद से दूर रहकर सभी क्षेत्रों के लिए सहयोग का हाथ बढ़ाती है और सहयोग करते समय यह नहीं देखती है कि कौन सा क्षेत्र, मंदिर या मूर्ति किस पंथ के अधीन है? वह आज भी समस्त दिगंबर जैनों की प्रतिनिधि संस्था मानी जाती है इसलिए मैं देशभर के दिगंबर जैन समाज व दिगंबर जैनों की सभी संस्थाओं से आग्रह करता हूँ कि आइए हम सभी तीर्थक्षेत्र कमेटी को एक पितृ संस्था की तरह सक्षम व मजबूत बनाने का कार्य करें। अपने-२ मतभेदों को भुलाकर कमेटी को मजबूत बनाने के लिए आगे आएँ।

इसी प्रकार तीर्थक्षेत्र कमेटी में एक ऐसा मार्गदर्शक मंडल बनाये जाने की आवश्यकता है जिसमें तीर्थक्षेत्रों से जुड़े हुए समाज के प्रमुख व सक्रिय लोगों को स्थायी स्थान दिया जाए ताकि अध्यक्ष व महामंत्री के चुनाव से मार्गदर्शक मंडल के सदस्य प्रभावित न हों और वे लंबे समय तक कमेटी के हर कार्य और निर्णय में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाते रहें। यदि हम ऐसा कर सके को कमेटी के कामकाज में स्थायित्व आएगा और निरंतरता आएगी। नये आने वाले लोगों को कार्य करने में आसानी रहेगी, वे भटकेंगे नहीं क्योंकि मार्गदर्शक मंडल उन्हें सही दिशा दिखा सकेगा।

अध्यक्ष कार्यालय के संपर्क सूत्र :
प्रवीण जैन, मो नं. : 7506735396
ईमेल : info@prabhatji.com
वेब साइट : www.Prabhatji.com

प्रभातचंद्र जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

तीर्थक्षेत्र कमेटी को मजबूत बनाना होगा

आज देश में अनेक दिगंबर संस्थाएँ हैं। इन संस्थाओं द्वारा एकत्र धन भी इनके सीमित उद्देश्यों पर खर्च होता है जबकि यदि सभी संस्थाएँ मिलकर किसी एक राष्ट्रीय संस्था को अपना समर्थन व सहयोग दें तो एक बड़ा भारी बदलाव लाया जा सकता है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ११९ वर्षों से कार्यरत है, तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण की दिशा में संगठित कार्य करने वाली एकमात्र संस्था है। आज गिरनारजी, केसरियाजी, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ जी, सम्मेद शिखरजी आदि के कानूनी मामले तीर्थक्षेत्र कमेटी ही चला रही है, ताकि विवादों को अदालतों के माध्यम से या फिर सुलह के माध्यम से निपटाया जा सके। जहाँ कहीं भी किसी भी प्राचीन दिगंबर जैन क्षेत्र पर संकट आता है या फिर विवाद उत्पन्न होता है तो सबसे पहले तीर्थक्षेत्र कमेटी ही आगे आती है।

अनेक क्षेत्रों से आवेदन आते रहते हैं कि उन्हें जीर्णोद्धार के लिए अनुदान की आवश्यकता है, आवेदनों को कमेटी लौटाती कभी नहीं है पर उतना सहयोग भी नहीं दे पाती है जितना वह देना चाहती है क्योंकि कमेटी के पास दान के अतिरिक्त आय के कोई साधन भी नहीं है, न कोई जमीन है और न ही कोई खेतीबाड़ी कि जिससे नियमित आय आती हो। समाज के उदारमना श्रेष्ठी श्रावकों का सहयोग अवश्य मिलता है जिनके प्रति कमेटी सदैव ही कृतज्ञ रहेगी। यदि देश की अन्य राष्ट्रीय संस्थाएँ नियमित रूप से अर्थ सहयोग करने लग जाएँ तो तीर्थक्षेत्र कमेटी वे सभी कार्य कर पाएगी जो करना चाहती है। हमारे अनेक क्षेत्र आज भी भयानक उपेक्षा के शिकार हैं, जहाँ धन के अभाव के कारण संरक्षण का कार्य नहीं हो पा रहा है, अनेक प्राचीन मंदिरों व तीर्थ क्षेत्रों का जीर्णोद्धार करवाने की आवश्यकता है पर वह नहीं हो पा रहा।

हमें इस दिशा में सुधार के लिए श्वेतांबर समाज से सीख लेने की आवश्यकता है। श्वेतांबर समाज में एक मुख्य व अन्य पेढ़ियाँ कार्यरत् हैं, उनके पास दान के रूप में देव द्रव्य आता है जिसे चढ़ावा भी कहते हैं। इस चढ़ावे से देशभर के तीर्थों की देखरेख, निर्माण व जीर्णोद्धार का काम किया जाता है, नये मंदिरों का निर्माण भी चढ़ावे से किया जाता है। जहाँ कहीं भी नवीन मंदिर के निर्माण की आवश्यकता होती है, वहाँ के समाज के लोग मुख्य पेढ़ी या पहले से संचालित किसी मंदिर की पेढ़ी को आवेदन करते हैं। आवेदन मिलने के बाद पेढ़ी के पदाधिकारी संबंधित आवेदन की जाँच करते हैं, उस स्थान का सर्वेक्षण करते हैं फिर मंदिर निर्माण में वास्तुशिल्प, मानचित्रण, सामग्री और धन जैसी आवश्यकता होती है उसे पूरा करवाते हैं। मुंबई महानगर में लगभग ११०० श्वेतांबर मंदिर हैं और इन सभी मंदिरों का संचालन मुंबई की एक पितृ संस्था के माध्यम से होता है, जिस श्वेतांबर मंदिर को जो आवश्यकता होती है उसको पूरा किया जाता है अर्थात् इन ११०० मंदिरों में एकत्र हुआ चढ़ावा एक श्वेतांबर मंदिर तक सीमित नहीं रहता है बल्कि उसे किसी भी अन्य श्वेतांबर जैन मंदिर की किसी भी आवश्यकता को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। वे हर राज्य व बड़े शहर में ऐसा करते हैं इसलिए वे संसाधनों का अधिकतम उपयोग बड़ी कुशलता से कर पाते हैं। इसलिए वे जहाँ जो भी कार्य करना चाहते हैं, उस कार्य को करने में धन कभी भी समस्या नहीं बन पाता है।

दूसरी ओर हमारे यहाँ अभी तक ऐसी अवधारणा का उदय भी नहीं हो सका है इसलिए देशभर में सौ-दो सौ नहीं बल्कि हजारों प्राचीन तीर्थ उपेक्षित पड़े हुए हैं, जीर्णोद्धार की वाट जोह रहे हैं। जिन क्षेत्रों पर हमारे मुनिगणों की दृष्टि पड़ जाती है वहाँ का उद्धार हो जाता है पर जहाँ मुनिराजों का आवागमन नहीं होता है या जहाँ समाज अत्यधिक कम होने के कारण दिगंबर मुनियों का विहार नहीं होता है वहाँ के क्षेत्र जर्जर हो रहे हैं, अनेक प्राचीन क्षेत्रों पर अन्य मताबलंवियों का कब्जा हो चुका है और आने वाले समय में हो जाएगा।

बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, तेलंगाना, आँध्र प्रदेश, तमिलनाडु जैसे कुछ राज्यों में स्थित अनेक जैन मंदिरों, जैन गुफाओं और जैन मूर्तियों पर कब्जे के समाचार लगातार पढ़ने और सुनने को मिलते हैं पर हम शोक मनाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। हमारे अपने ही श्वेतांबर बंधु भी उपेक्षित अनेक दिगंबर जैन मूर्तियों व मंदिरों पर कब्जा करके उनका रूपांतरण कर रहे हैं, कई स्थानों पर खड्गासन दिगंबर मूर्तियों पर सीमेंट से लंगोट व चक्षु लगाने के मामले सामने आए हैं। हैदराबाद के पतनचेरू से उठाकर पार्श्वनाथ भगवान की विशाल प्रतिमा श्वेतांबर समाज ने अपने पास रख ली है, जब उनसे बात की गई तो उनका कहना था कि मूर्ति तो वहाँ पर सैकड़ों वर्षों से पड़ी थी, दिगंबर जैन समाज ने उसकी देखरेख क्यों नहीं की? तब दिगंबर समाज क्यों सोया हुआ था?

महाराष्ट्र के कारला में कुछ श्वेतांबर बंधुओं ने २ वर्ष पहले पूरा दिगंबर जैन मंदिर ही उठाकर अन्यत्र स्थानांतरित कर दिया व उस मंदिर के बोर्ड से दिगंबर शब्द हटाकर उस पर सार्वजनिक जैन मंदिर लिखवा दिया है। वे धनबल से हमारे क्षेत्रों, मूर्तियों व मंदिरों को रूपांतरित करते जा रहे हैं और हम सभी निस्साहय बने चुपचाप देख रहे हैं।

देश के अनेक राज्यों से दिगंबर जैन मंदिरों व मूर्तियों पर कब्जे की खबरें आती रहती हैं। पर हमारी संस्थाएँ निस्साहय बनी हुई हैं। अभी भी समय है कि हम अपने-अपने आग्रहों को छोड़कर "**दिगंबरत्व**" की रक्षा के लिए "**भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी**" को हर बात से सक्षम बनाएँ, उसे आर्थिक रूप से इतना मजबूत बना दें कि यह संस्था हर प्राचीन तीर्थक्षेत्र और हर प्राचीन मूर्ति की सुरक्षा के लिए कदम उठा सके। आर्थिक आजादी के बिना तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने उद्देश्यों को पूरा नहीं कर सकती है।

राजेन्द्र के. गोधा

राजेन्द्र के. गोधा
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष व महामंत्री
प्रधान संपादक, तीर्थवंदना

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 10 अंक 12 मार्च 2021

श्री प्रभातचन्द्र जैन अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र गोधा कार्याध्यक्ष/महामंत्री
श्री शिखरचन्द पहाड़िया वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल दोशी उपाध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.) उपाध्यक्ष
श्री गजराज गंगवाल उपाध्यक्ष
श्री तरुण काला उपाध्यक्ष
श्री के.सी. जैन(काला) कोषाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा मंत्री
श्री विनोद कोयलावाले मंत्री
श्री खुशाल जैन (सी.ए.) मंत्री
श्री जयकुमार जैन (कोटावाले) मंत्री

संपादकीय सलाहकार
पद्मश्री डॉ.कैलाश मड़बैया
डॉ.श्रीमती नीलम जैन
डॉ.अनेकांत जैन
पंडित श्री अरुणकुमार जैन, शास्त्री

परामर्श मंडल
श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
श्री शरद जैन
श्री विनोद बाकलीवाल
श्री कमलबाबू जैन
श्री सुरेश सबलावत

संपादक मंडल
प्रधान संपादक
श्री राजेन्द्र के.गोधा
संपादक-साज सज्जा संपादक
श्री मनीष बैद श्री उमानाथ रामअजोर दुबे
उप संपादक
श्री किरण प्रकाश जैन श्री प्रवीण जैन(सी.एस.)
श्री लवकेश जैन श्री विजय धुर्रा

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
website : www.tirthkshetracommittee.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
whatsapp no.- 7718859108

मूल्य
वार्षिक : 300 रुपये
त्रिवार्षिक : 800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष) : 2500 रुपये

प्रासंगिक हैं तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के उपदेश 6
कौंडण्यपुर ग्राम, जिला – अमरावती, महाराष्ट्र का प्राचीन जैन मंदिर और प्रतिमाएँ 8
पधारें श्री दिगंबर जैन सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र, नेमावर 12
श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, सावरगाँव (महाराष्ट्र) 13
Kundadri Hill: Acharya Kundkund's samadhi sthal 15
तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी की 1200 वर्ष प्राचीन 4 फीट ऊँची प्रतिमा मिली 17
सिकन्दर अपने साथ ले गया था कल्याण मुनि को 18
धर्मशालाओं का आधार-स्तम्भ बनेगी Dharmashala.in वेबसाइट 19
बांग्लादेश में जैन धर्म 20
1000 वर्ष प्राचीन मंदिर जो देवलोक से उड़कर यहाँ पहुँचा 29
नेमावर में गुरु दर्शन 34

विशेष निवेदन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी सदस्यों से निवेदन है कि वह अपने नाम एवं स्थान के साथ मोबाइल तथा ई मेल तीर्थक्षेत्र कमेटी को tirthvandana4@gmail.com पर भिजवाने की कृपा करें जिससे भविष्य में ई मेल अथवा मोबाइल पर अन्य विषयों की जानकारी तथा बैठकों आदि की सूचनाएं भिजवाई जा सके।

मंत्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक 05 मार्च 2021 पर विशेष:

प्रासंगिक हैं तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के उपदेश

- डॉ सुनील जैन संचय, ललितपुर

काशी नगरी वर्तमान वाराणसी शहर में स्थित पौराणिक नगरी है। इसे संसार के सबसे पुराने नगरों में माना जाता है। विश्व के प्राचीनतम नगरों में से वाराणसी एक प्रसिद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी के रूप में विश्व विख्यात है। इस शहर में अभी भी विभिन्न धार्मिक संप्रदायों की प्राचीन उपासना पद्धतियों का प्रचलन है।

यह नगरी जैन तीर्थंकरों, शैव और वैष्णव संतों, गौतम बुद्ध, कबीर और तुलसी जैसे महापुरुषों की कर्मस्थली रही है। वाराणसी प्राचीन श्रमण संस्कृति की विभिन्न घटनाओं की साक्षी है। जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से 4 तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ, श्री चंद्रप्रभ, श्री श्रेयांशनाथ तथा पार्श्वनाथ के गर्भ, जन्म , दीक्षा, ज्ञान कल्याणकों का सौभाग्य इस नगरी को प्राप्त हुआ है। जैनाचार्य समन्तभद्र स्वामी ने वाराणसी में ही अतिशय दिखाया था।

वाराणसी में गंगा नदी के सुरम्य तट प्रभु जैन घाट पर भदैनी तीर्थ स्थित श्री सुपार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर उसी स्थान पर स्थित है जहाँ जैन धर्म के सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के गर्भ और जन्म कल्याणक मनाये गये थे। सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के पिता वाराणसी के शासक थे। उनका नाम राजा सुप्रतिष्ठ था तथा उनकी महारानी का नाम पृथ्वीदेवी था। ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी के दिन तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का जन्म हुआ। जिसका उल्लेख प्रसिद्ध जैन ग्रंथ तिलोयपण्णत्ति में किया गया है। जिसमें कहा गया है कि -'सुपार्श्वनाथ देव नगरी में माता पृथ्वी और पिता सुप्रतिष्ठ से ज्येष्ठ शुक्ला 12 के दिन विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न हुए।

तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का चिन्ह स्वस्तिक है, जिसे संपूर्ण भारतीय संस्कृति में समादृत एवं सर्वोच्च स्थान मिला हुआ है। कार्यारंभ के पूर्व स्वस्तिवाचन और उसका चिन्हांकन करना अनिवार्य अंग के रूप में स्वीकृत है। तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का संबंध इतिहासवेत्ताओं ने नाग जाति और नाग पूजा के साथ जोड़ा है।

तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ कि इस जन्मभूमि का संपूर्ण तीर्थक्षेत्र प्राचीन जैन संस्कृति का एक महान केंद्र रहा है। वर्तमान में वाराणसी में स्थित भदैनी क्षेत्र में गंगा किनारे दो दिगंबर जैन मंदिर और मध्य में एक श्वेतांबर जैन मंदिर है। ऐसा लगता है कि गंगा के किनारे तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के पिता का विशाल महल रहा होगा, जहाँ इनका जन्म हुआ । वर्तमान मंदिर की वेदी में मूलनायक तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की पद्मासन प्रतिमा है जिसकी अवगाहना 1 5 इंच है। इस मूलनायक प्रतिमा के अतिरिक्त दो श्वेत पाषाण की और एक कृष्ण पाषाण की तथा एक पीतल की प्रतिमा भी विराजमान है। गर्भ गृह के द्वार पर दाएं- बाएं में मातंग यक्ष और काली यक्षी बनी हुई है। यक्ष का वाहन सिंह है और यक्षी वृषभरुढ़ा है।

गर्भगृह के बाहर कक्ष में एक क्षेत्रपाल जी विराजमान हैं। एक आले में चरण विराजमान हैं। मंदिर का शिखर बहुत ही सुंदर बना हुआ है। मंदिर के दोनों ओर खुली छत है। यहां से गंगा का मनोहारी दृश्य बहुत ही आकर्षक लगता है जो अवलोकनीय है। गंगा नदी के तट पर बना हुआ जिनालय स्थापत्य कला को सुशोभित कर रहा है।

नीचे गर्भ गृह मंदिर में क्षेत्रपाल एवं देवी पद्मावती मंदिर भी विराजमान है। जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन की एक ऐतिहासिक घटना जुड़ी होने से जैन घाट पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ के चरण चिन्ह भी विराजमान हैं। मंदिर का निर्माण प्रभुदास जैन ने किया था। इनके परिवारजन श्री अजय जैन, श्री प्रशांत जैन आरा आदि आज भी इस क्षेत्र की देख-रेख में संलग्न हैं।

इस क्षेत्र परिसर में गणेश प्रसाद जी वर्णी जी द्वारा 1905 में स्थापित श्री स्याद्वाद महाविद्यालय स्थित है। सामने जैन छात्रावास स्थित है। हजारों उत्कृष्ट विद्वान इस महाविद्यालय में पढ़कर तैयार हुए, जिन्होंने राष्ट्र, साहित्य, संस्कृति, जैनधर्म की उल्लेखनीय सेवा की और निरंतर अभी भी जारी है।

आज भी देश के विभिन्न प्रान्तों के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य संस्थानों में इसी महाविद्यालय में पढ़े विद्वान उच्च पदस्थ होकर अपनी महती सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में यहां के विद्यार्थियों ने जो योगदान दिया वह अपने आप में गौरवशाली है। सन 1921 के असहयोग आंदोलन, सन 1932 के सत्याग्रह, सन 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में यहां के अनेक छात्रों ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। सन 1942 जिसे हम अगस्त आंदोलन के नाम से जानते हैं, में तो यह विद्यालय विद्यार्थियों का शस्त्रागार ही बन गया था। यहां के अनेक छात्र इस आंदोलन में पिस्तौल आदि के रखने में जेल भेजे गए, रातों रात जागकर भूखे -प्यासे रहकर इस आंदोलन में यहाँ के छात्र पूरे समर्पण से कूद पड़े थे। 'रणभेरी' नाम से पर्चे छापकर वितरित करते हुए भी अनेक छात्र पकड़े गए फिर भी निराश नहीं हुये और आंदोलन में जुटे रहे। इस विद्यालय के संस्थापक गणेश प्रसाद वर्णी ने जबलपुर में अपनी चादर देश के खातिर नीलाम कर दी थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी इस विद्यालय से बहुत प्रभावित थे।

मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे भी यहाँ पांच वर्ष अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। सुपार्श्वनाथ का बचपन व्यतीत होने पर जब उन्होंने युवावस्था में कदम रखा तो महाराजा सुप्रतिष्ठ ने उनका विवाह किया और कुछ ही समय बाद उनका राज्याभिषेक कर स्वयं मुनि-दीक्षा ले ली। इसके पश्चात सुपार्श्वनाथ सैकड़ों वर्षों तक न्यायपूर्वक प्रजा का लालन-पालन करते रहे। राजसी वैभव के बीच भी उनकी वृत्ति संयमित थी। इसी प्रकार दिन बीतते गए और एक दिन वे महल में टहल रहे थे, तभी उनकी दृष्टि वृक्षों से गिरते पत्तों और वहां पड़े मुरझाए फूलों पर पड़ी। उन्हें तत्क्षण ही जीवन की नश्वरता का बोध गया। वे सोचने लगे कि उन्होंने व्यर्थ ही इतने वर्ष सांसारिक सुखों की भेंट चढ़ा दिए। उसी क्षण उन्होंने राज-पाट का भार अपने पुत्र को सौंपकर ज्येष्ठ मास की त्रयोदशी तिथि को वाराणसी में ही मुनि-दीक्षा ली और वन-वन भ्रमण कर कठोर तप करने लगे।

भगवान श्री सुपार्श्वनाथ जी ने हमेशा सत्य का समर्थन किया और अपने

अनुयायियों को अनर्थ हिंसा से बचने और न्याय के मूल्य को समझने का सन्देश दिया। उनकी शिक्षायें एक अहिंसक, त्यागपूर्ण तथा प्रेमपूर्ण विश्व व्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं क्योंकि उनकी शिक्षाएँ सारी मानव जाति के लिए हैं। इतने वर्षों के बाद भी भगवान सुपार्श्वनाथ का नाम स्मरण उसी श्रद्धा और भक्ति से लिया जाता है, इसका मूल कारण यह है कि उन्होंने इस जगत को न केवल मुक्ति का संदेश दिया, अपितु मुक्ति की सरल और सच्ची राह भी बताई। त्याग और संयम, प्रेम और करुणा, शील और सदाचार ही उनके प्रवचनों का सार था। वर्तमान में पूरा विश्व कोरोना वायरस की चपेट में है, ऐसे में तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के उपदेश अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। जन्मभूमि जैन घाट भदैनी वाराणसी में वार्षिक उत्सव एवं विशाल पूजा पाठ एवं भगवान सुपार्श्वनाथ के जन्मकल्याणक महोत्सव को धूमधाम से मनाया जाता है।

भदैनी जैन घाट पर स्थित इस तीर्थक्षेत्र का जैन परंपरा में अत्यधिक महत्त्व होने से प्रतिवर्ष यहाँ हजारों यात्री देश-विदेश से दर्शन के लिए आते हैं साथ ही बड़ी संख्या में पर्यटक भी आते रहते हैं। क्षेत्र का कायाकल्प निरंतर जारी है। देव दीपावली पर जैन घाट को भी भव्य रूप में सजाया जाता है।

मोक्ष कल्याणक पर चढ़ाया जाता है निर्वाण लाडू :

छद्मस्थ अवस्था के नौ वर्ष व्यतीत कर फाल्गुन कृष्ण षष्ठी के दिन केवलज्ञान प्राप्त किया। आयु अन्त के एक माह पहले सम्मेदशिखर पर जाकर एक माह का प्रतिमायोग लेकर फाल्गुन कृष्णा सप्तमी के दिन सूर्योदय के समय मोक्ष को चले गये। । उनकी मोक्ष स्थली सम्मेद शिखर जी सहित देश के जैन मंदिरों में श्रद्धालु निर्वाण लाडू श्रद्धा पूर्वक चढ़ाया जाता है।

आठों साज गुण गाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय।
दया निधि हो, जय जगबन्धु दया निधि हो।
तुम पद पूजौं मन वच काय, देव सुपारस शिवपुर राय।
दया निधि हो, जय जगबन्धु दया निधि हो।

कौंडण्यपुर ग्राम, जिला – अमरावती, महाराष्ट्र का प्राचीन जैन मंदिर और प्रतिमाएँ

- मनीष जैन, उदयपुर (राजस्थान)

कौडिन्यपुर मंदिर समूह का दृश्य

रुक्मिणी हरण स्थल - कौडिन्यपुर

एक बार मैंने जैन शास्त्रों में कौंडण्यपुर के बारे में पढ़ते समय कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण के बारे में भी पढ़ा था। मन में ये जिज्ञासा हुई कि क्या ये स्थान क्या आज भी है और है तो कहाँ है और क्या वहाँ कोई प्राचीन जिन मंदिर भी है? हमें उत्तर मिला **हाँ**। ऐसा एक स्थान महाराष्ट्र प्रान्त के अमरावती जिले में मिला, जिसका नाम आज भी कौंडण्यपुर है और हाँ। इस कौंडण्यपुर में अभी एक प्राचीन जिन मंदिर है जिसमें कुछ प्राचीन जिन प्रतिमाएँ भी विराजमान है। ये स्थल कम जाना पहचाना किन्तु एक अतिशय क्षेत्र के रूप में अभी विद्यमान है।

कौंडण्यपुर ग्राम अमरावती-आर्वी-वर्धा मार्ग पर अमरावती से 45 किमी की दूरी पर स्थित है। आर्वी से ये 9 किमी की दूरी पर है। कौंडण्यपुर कभी विदर्भ की राजधानी हुआ करता था और एक महाभारतकालीन उत्तम नगर था। किन्तु आज ये मात्र नदी किनारे का एक ग्राम बनकर रह गया है हालाँकि हिन्दू मतावलम्बियों ने इस स्थल पर अनेक मंदिर बनाकर या उनके पुरातन मंदिर सहेजकर इसको एक तीर्थ सा बना दिया है। यहाँ इस्कॉन ग्रुप द्वारा भी एक कृष्ण मंदिर बनाया गया है। वहीं एक मात्र जैन मंदिर भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराये हुए है। अधिकांश मंदिर नदी के किनारे ही स्थित हैं।

कौंडण्यपुर जैन मंदिर एवं इसका महत्व

कौंडण्यपुर ग्राम और यहाँ का जिन मंदिर वर्धा नदी के किनारे स्थित हैं। जिन मंदिर के बगल में ही 3-4 हिन्दू मंदिर भी स्थित हैं। यहाँ के जिन मंदिर जी में मूल प्रतिमा सुपार्श्वनाथ भगवान की है, जो कि लगभग 900 से 1000 वर्ष प्राचीन है। सिर और कानों की बनावट इसे एक अनूठी प्रतिमा बना देते हैं। इसके अलावा मंदिर जी में और भी छोटी किन्तु प्राचीन प्रतिमाएँ है। तीन प्रतिमाएँ श्वेत पाषाण की तो दो प्रतिमाएँ काले पाषाण की हैं तथा मूल प्रतिमा जी पीले (कत्थई) रंग के पाषाण की है। मंदिर जी के क्षेत्रपाल जी की भी यहाँ बड़ी मान्यता है। इस स्थान की ऐतिहासिकता महाभारतकालीन है। किंवदंतियों के अनुसार इसी स्थान से कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया था। यहाँ इस घटना की याद संजोये रखने के लिए रुक्मिणी हरण स्थल और खिड़की का निर्माण भी सर्व समाज द्वारा किया गया है। महाराष्ट्र प्रान्त के पुरातत्व विभाग ने भी कौंडण्यपुर की ऐतिहासिकता जानने के लिए यहाँ की

दिगंबर जैन मंदिर कौडिन्यपुर - बाहरी दृश्य

खुदाई कराई थी, जहाँ से 14वीं सदी के किले की दीवार और अन्य सामग्री प्राप्त हुई है। इसके अलावा इसी जगह से पाषाण युग और ताम्र युग की कुछ सामग्री भी प्राप्त हुई है। हैदराबाद के ब्रिटिशकाल के सरकारी राजपत्र में भी इस स्थल का वर्णन प्राचीन नगर के रूप में किया गया है।

वर्तमान स्थिति तथा हमारा कर्त्तव्य

कौडिण्यपुर ग्राम में कोई जैन परिवार निवास नहीं करता है किन्तु इस मंदिर की प्रबंध व्यवस्था समीपस्थ ग्राम आर्वी के जैन समाज द्वारा की जाती है जो कि यहाँ से 9 किमी दूरी पर है। वैसे जिन मंदिर जी के बाहर ही 1 हॉल और 1 या 2

कौडण्यपुर जैन मंदिर - अंदर का दृश्य

कमरे है, जहाँ कोई संत या यात्री आदि कभी ठहर सकते हैं बाकी अन्य धर्मों की धर्मशालाएँ भी ग्राम में बनी हुई हैं। हालाँकि यहाँ जैन यात्रियों की आवाजाही बहुत कम है और उसका कारण जैन श्रावकों को इस स्थान के बारे में जानकारी न होना है। इसीलिए इस स्थान का विकास नहीं हो पाया है। देशभर के जैनों से मैं अपील करता हूँ कि कृपया अधिक से अधिक संख्या में इस जैन तीर्थ के दर्शन के लिए पधारें तथा क्षेत्र के विकास के लिए योगदान दें।

तेर ग्राम, जिला-उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) का प्राचीन जैन मंदिर और प्रतिमाएँ

- मनीष जैन, उदयपुर (राजस्थान)

जीर्णोद्धार के बाद मंदिर जी का बाहरी दृश्य

प्राचीन प्रतिमाएं (चित्र -1)

महाराष्ट्र में उस्मानाबाद ज़िला मुख्यालय से 18 किमी उत्तर-पूर्व की ओर स्थित एक ग्राम तेर है। तेर एक अत्यंत प्राचीन ग्राम है जो कि १२वीं शताब्दी में तगरपुर शहर के नाम से विख्यात था। 17वीं

नवीन दीर्घा में विराजमान प्राप्त प्राचीन प्रतिमाएं

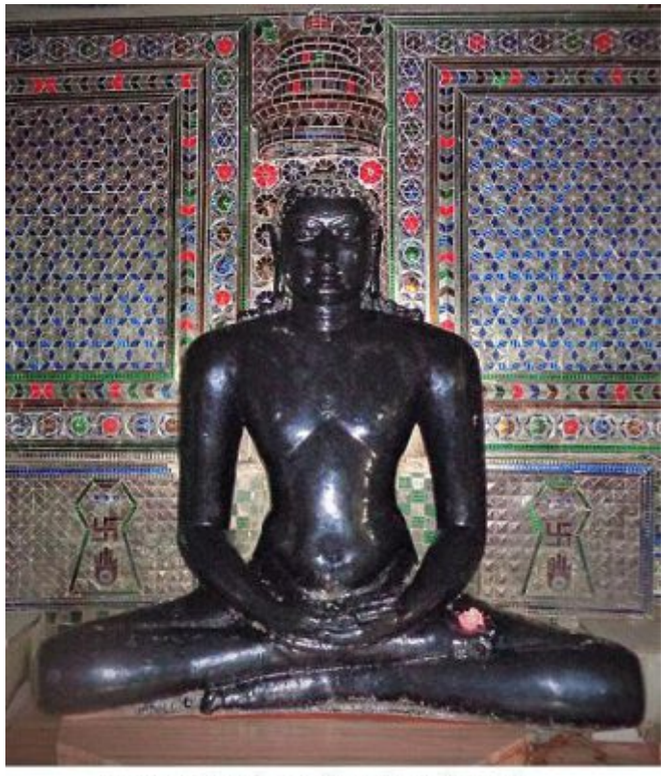

मूलनायक प्रतिमा जी - महावीर स्वामी (१२ वी शताब्दी)

शताब्दी तक **तगरपुर** का अस्तित्व रहा बाद में धीरे धीरे उस्मानाबाद की ओर पलायन हुआ और बाद में ये तेर ग्राम बन गया। विद्वानों का मत है कि टॉल्मी ने पैठण के साथ ही दक्षिण भारत के जिस प्रसिद्ध व्यापारिक नगर **तगारा** का उल्लेख किया है, वह इसी स्थान पर बसा था।

टॉलेमी ने लिखा है कि दक्कन की अनेक प्रसिद्ध वस्तुएँ पैठण और तगरपुर (तेर) के बाज़ार में लाई जाती थी, जहाँ से ये बैलगाड़ियों में भरकर भरूच भेजी जाती थीं, जहाँ से ये ग्रीस और रोम को निर्यात की जाती थीं। तेर से प्राप्त रोमन सिक्के इसकी पुष्टि करते हैं।

प्राचीन मानस्तम्भ प्रतिमाएं

प्राचीन समय में तगारा की बनी हुई मलमल बहुत प्रसिद्ध थी। तेर शिलाहार राजाओं की एक शाखा की राजधानी भी रहा है और सातवाहनों के समय में भी यह प्रमुख तीन शहरों में से था।

तेर जैन मंदिर एवं इसका महत्व :

यहाँ का पौराणिक इतिहास नल-नील तथा राजा करकंडु तक जाता है। इसके अलावा सातवाहन राजाओं के समय ये स्थान दक्षिणपथ में एक सर्व प्रसिद्ध जैन तीर्थ क्षेत्र बन गया था। 11वीं सदी में जैन मुनि कनकामर द्वारा लिखे गए करकंड चरियु नामक ग्रन्थ में इस स्थान का उल्लेख तेरापुर नाम से आया है और किन्हीं राजा विद्याधर द्वारा यहाँ एक प्रसिद्ध जैन मंदिर बनाने का उल्लेख भी है। ऐसी ही जानकारी ब्रह्म कथा कोष में भी लिखी मिलती है, जो कि लगभग उसी काल में लिखा गया था, इससे सिद्ध होता है कि तेर में प्राचीन समय से ही जैन मंदिर विद्यमान थे और उनका समय-समय पर जीर्णोद्धार भी हुआ।

वर्तमान में तेर में एक प्राचीन जैन मंदिर है जो कि गाँव के भीतर ही स्थित है। ये मूल मंदिर जी लगभग 800 वर्ष प्राचीन है (1235 ईस्वी) और इसका प्रथम जीर्णोद्धार १४४२ ईस्वी में हुआ था। महाराष्ट्र में महावीर स्वामी को समर्पित यह एकमात्र प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। तेर के मंदिर से दो प्राचीन शिलालेख भी

प्राचीन तीर्थंकर चरण चिन्ह पट्ट

अन्य प्राचीन प्रतिमाएं

प्राप्त हुए हैं जिनसे इस मंदिर की प्राचीनता और इतिहास का पता चलता है। साथ ही शिलालेख में तीर्थंकर महावीर स्वामी के समवशरण के यहाँ आने का उल्लेख भी है। यहाँ का मुख्य मंदिर हेमाड़पंथी है, जहाँ प्रभु महावीर स्वामी की 5 फीट 4 इंच अवगाहना की पद्मासन कृष्ण वर्ण की पाषाण प्रतिमा विराजमान है, जो कि अत्यंत अतिशयकारी है। कई पंडितों और मुनियों ने अपनी रचनाओं में भी तेर ग्राम के महावीर स्वामी की अनुपम प्रतिमा का

उल्लेख किया है।

कुछ वर्षों पहले यहाँ के मंदिर के जीर्णोद्धार के समय खुदाई में २० से भी अधिक प्रतिमाएँ प्राप्त हुई थी जो कि सभी इसी मंदिर जी में विराजमान हैं। इसके अलावा मंदिर में अन्य जैन मूर्तियाँ और जैन संतों के पद चिह्नों के निशान देखे जा सकते हैं। भगवान पार्श्वनाथ का भी एक अत्यंत प्राचीन मंदिर इसी परिसर में स्थित है। यहाँ पुरावस्तु संग्रहालय भी है।

यहाँ मंदिर जी परिसर के बाहर ही एक छोटा सा पोखर कुआं है। इस मंदिर की ईटें बहुत बड़ी है और उसकी प्राचीनता की सूचक हैं। मंदिर जी से प्राप्त प्राचीन ईटें और मंदिर जी के निर्माण में काम आयी ईटें इस पोखर (कुएं) के पानी में नहीं डूबती हैं, बल्कि तैरती रहती हैं। शायद इसी कारण ग्राम का नाम भी तेर पड़ गया है। पहले इस कुएं से कई बर्तन भी निकले थे।

वर्तमान स्थिति तथा कर्त्तव्य :

वर्तमान में इस मंदिर जी का जीर्णोद्धार कार्य किया गया है और किया जा रहा है। क्षेत्र का प्रचार प्रसार होना चाहिए और आसपास के तीर्थों में पोस्टर आदि लगाने चाहिए। जब भी आप उस्मानाबाद या कुंथलगिरि पधारें तो कृपया अधिक से अधिक संख्या में इस स्थान के दर्शन भी कीजिए। इस क्षेत्र के विकास के लिए और ऐसे ही कई क्षेत्रों के विकास के लिए हम सभी को सहयोग करना चाहिए।

पधारें श्री दिगंबर जैन सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र, नेमावर

रावण के सुत आदि कुमार, मुक्ति गए रेवाटत सार।
कोटि पंच अरू लाख पचास, ते बंदो थारि परम हुलास।।

मध्यप्रदेश के देवास जिले में स्थित खातेगाँव तहसील के समीप नेमावर एक ऐसा स्थल है जहाँ से साढ़े पाँच करोड़ मुनिराजों ने मोक्ष प्राप्त किया था। किसी श्रावक को स्वप्न देकर १८० वर्ष पूर्व रेवा तट पर एकसाथ तीन प्रतिमाएँ प्रकट हुई थीं। पहली प्रतिमा भगवान आदिनाथ की, जो नेमावर में स्थित जिनालय में विराजमान है, दूसरी प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की, जो नेमावर से २० किलोमीटर दूर हरदा के इंदिरा गाँधी वॉर्ड स्थित जिनालय में विराजमान है और तीसरी प्रतिमा, भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी बड़ा जैन मंदिर, महावीर मार्ग, खातेगाँव में प्रतिष्ठित है। तीनों प्रतिमाएं चतुर्थ कालीन एवं अतिशयकारी प्रतिमाएं हैं।

अंतिम एवं चतुर्थ प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र नेमावर में विराजमान है। यह प्रतिमा रेवा नदी के पुल निर्माण के दौरान भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। इन चारों प्रतिमाओं में नीचे प्रशस्ति नहीं होने से इनकी प्राचीनता स्वयंसिद्ध है। भूगर्भ से प्राप्त होने से अतिशय क्षेत्र एवं साढ़े पाँच करोड़ मुनिराजों के निर्वाण स्थल होने से नेमावर सिद्ध क्षेत्र तो है ही, भूगर्भ से प्राप्त जिनबिंबों के दर्शन का अपूर्व लाभ यहीं ३५ किलोमीटर के दायरे में लिया जा सकता है।

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के पावन चरण पहली बार १९९५ में पड़े और क्षेत्र का कायाकल्प हुआ, २८ एकड़ भूखण्ड पर पाषाण निर्मित पंचबालयति, त्रिकाल, चौबीसी, सहस्रकूट जिनालय, संत निवास एवं आचार्य ज्ञानसागर व्रती आश्रम स्थित है। दो बार मुनि दीक्षा (३३), दो बार आर्यिका दीक्षाएँ (३७) एवं ऐलक क्षुल्लक दीक्षाएँ भी प्रदान कीं।

गुरुदेव के मुखारविंद से इस क्षेत्र का नामकरण श्री सिद्धोदय सिध्दक्षेत्र नेमावर रखा गया। आचार्य भगवान के मंगल आशीर्वाद से इस क्षेत्र पर विशाल पंचबालयती एवं त्रिकाल चौबीसी जिनालय का निर्माण कार्य तीव्रगति से चल रहा है। बंशीपुर पहाड़ के लाल पाषाण से मंदिर का निर्माण हो रहा है,

साथ ही साथ एक विशाल सहस्त्रकूट जिनालय का भी निर्माण पीले पाषाण से चल रहा है, जिनमें सप्तधातु की प्रतिमाएँ विराजमान की जाएँगी। रेवा तट नर्मदानदी के किनारे पर बसा हुआ यह क्षेत्र, जहाँ पर पीले पाषाण से विशाल संत भवन का निर्माण कार्य भी हो रहा है।

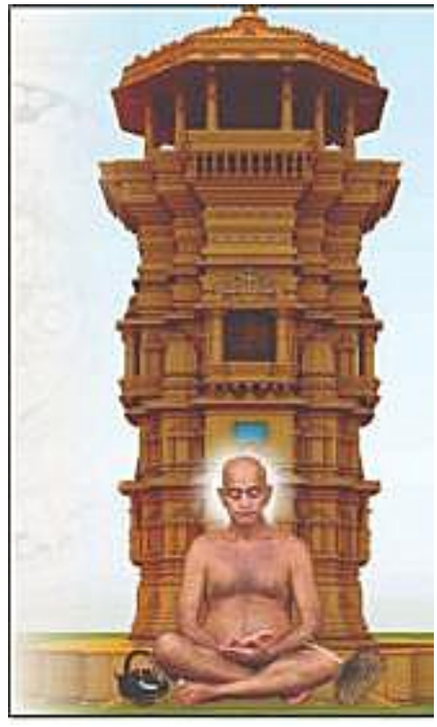

क्षेत्र पर नर्मदा नदी से प्राप्त पाषाण की भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाजी विशाल मंदिर बनाकर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराजजी के ससंघ सान्निध्य में विराजमान की गई। क्षेत्र पर विशाल यात्री निवास, धर्मशालाएं बनी हुई है। यहां पर आचार्य श्री के आशीर्वाद से आचार्य ज्ञानसागर व्रती आश्रम स्थापित है। क्षेत्र पर दयोदय गौशाला भी है। नेमावर में एक प्राचीन आदिनाथ जिनालय भी है, जिसमें मूलनायक भगवान आदिनाथ जी की प्रतिमा लगभग ३५० वर्ष पूर्व विराजमान की गई थी।

वर्तमान में जबलपुर, डोंगरगढ़, रामटेक, पपौराजी एवं इन्दौर में स्थापित प्रतिभास्थली की ब्र.बहनों के प्रतिभा-मंडल के सृजन का सौभाग्य भी इस क्षेत्र को ही प्राप्त हुआ है। आचार्य भगवन के मंगल आशीर्वाद एवं ससंघ सान्निध्य में अति शीघ्र विशाल भव्य पंच कल्याणक होने की पूरी संभावना है। वर्तमान में क्षेत्र के अध्यक्ष पद पर श्री सुंदरलाल जैन इंदौर कार्यरत हैं एवं कार्याध्यक्ष तथा निर्माण समिति प्रमुख संयोजक के रूप में श्री संजय जैन "मैक्स', कोषाध्यक्ष के रूप में श्री महेंद्र अजमेरा, हरदा एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सुरेश काला खातेगांव, अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

क्षेत्र का पता

श्री दिगम्बर जैन रेवातट सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र
ग्राम- नेमावर, तहसील खातेगांव, जिला देवास, मध्यप्रदेश

संपर्क सूत्र – संजय जैन मैक्स- 9425053521, सुरेश काला जैन- 9425347132, महेन्द्र अजमेरा जैन- 6260788068, जिनेश काला –9425476152

निकटतम रेलवे स्टेशन-

हरदा -२० किमी

इन्दौर-१२५ किलोमीटर,
भोपाल-१२० किलोमीटर

दानराशि के लिए बैंक खाता:

खाता नाम-

दिगंबर जैन रेवतत सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र ट्रस्ट, नेमावर

(Digmbar Jain Rewatat Sidhoday Siddhkshetra Trust, Nemawar)

1) भारतीय स्टेट बैंक शाखा- हरदा

चालू खाता- 6302980905

आईएफएससी - SBIN0000379

2) बैंक ऑफ इंडिया शाखा -नेमावर

बचत खाता: 892310100007733

आईएफएससी BKID0008923

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, सावरगाँव (महाराष्ट्र)

- स्पूर्ति जैन, बैंगलुरू (कर्नाटक)

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सावरगाँव, जिला उस्मानाबाद में स्थित है। यह गाँव के बीच में स्थित है, जो हेमरापंथी शैली का है और लगभग 1200 वर्ष प्राचीन है। इस मंदिर में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की काले पाषाण की पद्मासन प्रतिमा 4.3 फीट ऊंची है।

यह प्रतिमा बहुत ही चमत्कारी और आकर्षक है। मूलनायक भगवान के अलावा, भगवान श्री आदिनाथ की मूर्ति पद्मासन मुद्रा में संवत् 1598 में प्रतिष्ठित की गई थी, भगवान सुपार्श्वनाथ, अरहनाथ, चंद्रप्रभु, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ की अन्य प्राचीन मूर्तियाँ भी दर्शनीय हैं।

कहा जाता है कि यह मूर्ति मंदिर के पास भूगर्भ में छिपी हुई थी। किंवदंती है लगभग 200 साल पहले एक पंडित बापूदास ने अपने सपने में इस मूर्ति को देखा था। फिर उसने अपने सपने के अनुसार भूमि खोदी और इस भव्य मूर्ति को प्राप्त किया और उसी प्रतिमा को इस मंदिर में को प्रतिष्ठित किया था।

इस मंदिर में एक सभा मंडप भी है और सभा मंडप के दोनों किनारों में प्राचीन और भव्य मानस्तंभ खड़े हैं। भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर वज्रलेपन का कार्य १९८३ में आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के सान्निध्य में किया गया था।

मंदिर का अतिशय (अर्थात् चमत्कार) क्या है: -

श्रावण शुक्ल के पांच दिनों के दौरान साँप, बिच्छू और छिपकली आदि जैसे 1 से 5 हानिकारक जहरीले जानवर बिना किसी अन्य को नुकसान पहुंचाए मंदिर में रहते हैं। लोगों में ऐसी मान्यता व विश्वास है कि मूलनायक भगवान की प्रतिमा चमत्कारी है और यहाँ भक्तिपूर्वक पूजा के बाद मनोकामना पूरी होती है। अब इस गांव में कोई जैन परिवार नहीं रहता है। मंदिर की देखभाल करने का उत्तरदायित्व एक जैन परिवार ने ले रखा है। यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए धर्मशाला भी है।

पता-

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, सावरगाँव (महाराष्ट्र)

सावरगाँव-केमवाडी रोड, सावरगाँव, तालुका तुलजापुर, जिला उस्मानाबाद, महाराष्ट्र 413624

Kundadri Hill: Acharya Kundkund's samadhi sthal

- Mrs. Spoorthi Jain, Bangalore

Kundadri is a hill with dense forest in the western ghats located in Shimoga district of Karnataka State. The huge monolith that lies 3500 feet above the sea level. This is located on the Theerthahalli-Agumbe road, about 12 Km from Theertahhalli and about 110 km from Mangalore.

Kundadri hill host an amazing view of dense forest, paddy fields, a series of rolling green mountains, wandering streams and valleys. Above all never ending sky filled with cotton candy like clouds is sure to stun any individual. Last but not least never miss an opportunity to witness the sunset and sunrise that offers a feast to the eye and soul.

The hill is the ancient Jain Heritae place of Acharya KundKund, the renowned Jainacharya, who lived in the 1st century AD, who attain salvation in this place.

He wrote many great Jain holy books like Samayasara, Niyamasara and Panchaparamagama here.

The great saints have special names such as Padmanandi, Griddapichcharya, Vakragriva,

Elacharya and he is popularly referred to as Kundkund possibly because the village of Kondakundla in Anantapur district of Andhra Pradesh might represent his birth place. Padmanandi was the birth name of the acharya.

He went to Samavasarana of Tirthankar Seemandhar Swami in Videha kshetra with the help Akshagamini vidya to clarify his doubts. When he was in Samavasarana, he was very small in size as compared to Videha Kshetra's human size and one devata took him in his palm and shown to all, devata called him Yelacharya.

Similarly, when he was traveling at the sky, the peacock feathers Pichchhi of the Acharya had fallen away and the Kundkundacharya collected few feathers of the eagle and made a pichchhi because Digambar Jain Munis shouldn't move an inch without having Pichchhi in hands to follow the Ahimasa Mahavrat. As an exception, he used eagle feathers to make a pichchhi so he called Griddhapichchhacharya.

Kundkundacharya is being worshiped and honored the position after Tirthankara and Ganadhara in Jainism.

The Kundadri hill which is under the administration of the Hombuja Jain Mutt. Only a few years ago under the guidance and leadership of Devendrakeerti Bhattaraka Mahaswamiji, Shri Kshetra Hombuja Jain Mutt, the entire hill is beautifully renovated.

Every year on Makara Sankranti, special Abhisheka and Rath festival are held in the holy presence of Devendrakeerti Bhattarak Maha Swamiji.

On the top of the hill, an ancient Temple of Bhagwan Parshwanath Tirthakar is situated, which was built by the Kings of Alupap. This is 17th century Jain temple, completely built of stones, which is beautifully carved.

Infront of the basadi, 35 feet high Brahmastamba is there, at the top of the Bhramastambha Sheetalnath Tirthankar's Yaksha Brahma Yaksha idol is installed. At the foot of the Brahmastambha, an ancient nishadi inscription is available, which reads that Divakaranandi munimaharaj took Sallekhana at the place. Usually, Manstambhas are installed in front of Jain Basadis but this is a rare construction.

On the Left and right side of the temple, ancient idols of Chandranatha Tirthankar and Nemintah Tirthankar are installed.

The Basadi is accessed through the Mukhamantapa,

after the Mukhamantapa spacious Sabhamantapa attracts huge 4 pillars with tender carvings on it.
In the Garbhagruha 3.5 feet tall statue of Bhagwan Parshwanatha is installed, which is the Moolnayaka here. Parshwanath idol with Prabhavali is beautifully carved in a single stone. The sun rays fall on the Parshwanath Tirthankar idol every year on Makar Sankranti. Devi Padmavathi's idol is also installed in the Basadi.
At the back of the Basadi, there is a Paduka Mandir with the sacred footprints of Acharya KundKund.
The temple was built to preserve the footprints of Kundkundacharya in ancient times. On the inner rock of the temple, the ancient footprints of the Acharyas is carved on the rock. This is one of the ancient parts of the entire Kundadri hill.
On the left of the Basadi there is a Natural pond called papa vichhedhini, water in the pond never ever drained.
Jain Shravaka and shavikas from nearby places and all over the Karnataka attended pooja on the occasion of Makar Sankranti.
Kundadri is a pilgrimage center for Jains since ancient times, it is an excellent place for meditation. Come and enjoy the positive energy here.

How to Reach Kundadri

By Air

The nearest airport to Kundadri is Mangalore Airport which is roughly 126 kilometres. The second closest is Kempegowda International Airport, which is about 350 kilometres.

By Rail

Shimoga Railway Station, which is the closest one. From there, you can you can hop on the bus to Theerthahalli.

By Road

There are regular buses plying to Shimoga. As an alternative, if you choose to drive down, you can get onto National Highway NH-206 for Shimoga and take a detour to NH-13 to reach Theerthahalli. Don't forget to turn right at Guddekere.

समाचार

तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी की 1200 वर्ष प्राचीन 4 फीट ऊँची प्रतिमा मिली

तमिलनाडु में समय-समय पर मिलने वाली जैन विरासतों में आज एक और नाम जुड़ गया। तिरुवल्लूर जिले के मेय्यूर गाँव में जैन श्रावक जीवकुमार बी. ने एक प्रतिमा खोजी है,जिसे तालाब में फिंकवा दिया गया था,यह प्रतिमा लगभग ७वीं-८वीं सदी की है, यह काल तमिलनाडू में जैनधर्म का स्वर्णयुग था।

उसके बाद से शैव-वैष्णवों की एकता ने जैन-धर्म को तमिलनाडू से पराभूत कर दिया गया, उस दौरान लाखों नहीं करोड़ों जैन धर्मान्तरित कर दिए गए,उनको शूद्र बनाकर जबरदस्ती मांसाहारी बनाया गया, जो धर्मान्तरित नहीं हुए उनको दर्दनाक मौत मिली या जंगलों में भाग गए, साथ ही जैन अवशेष नदियों तालाबों में बहाए गए। यह समय-समय पर निकलने वाली विरासत उसी की निशानी है।

वर्तमान में तमिल जैनों की संख्या काफी कम है, हमें चाहिए कि जैनधर्म को बचाने के लिए उसके प्रसार के लिए जो जैनधर्म से दूर हो गए उनकी पुनः घर-वापसी करवाएँ।

रविवार 28 फरवरी २०२१ को प्रातः 12:00 बजे तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई के निकट तिरुवल्लूर जिले के मेय्यूर गाँव से तालाब से दूसरे तीर्थंकर श्री अजित नाथ जी की 4 फीट ऊंची प्रतिमा प्राप्त हुई है। इस तालाब में मूर्ति होने की सूचना कुछ समय पहले मिली थी और आज समाज के कुछ लोगों ने उस तालाब में डेढ़ घंटे के प्रयास के बाद यह मूर्ति बाहर निकाल ली । यह लगभग 1200 वर्ष प्राचीन है और इस पर हाथी का चिन्ह बना हुआ है । इस

गाँव में कोई भी जैन परिवार नहीं रहता है।

बी. जीवकुमार पहले भी लगभग २० प्राचीन जैन तीर्थंकर प्रतिमाएँ खोज चुके हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से हम उनका हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

सिकन्दर अपने साथ ले गया था कल्याण मुनि को

- रमेश जैन एडवोकेट, नई दिल्ली

सिकन्दर का जन्म ईसा से 356 वर्ष पूर्व यूनान में मकदूनिया के राजा फिलिप के घर हुआ था। पिता की मृत्यु के बाद 20 वर्ष की आयु में वह गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठते ही उसने ईरान, मिश्र व अफगानिस्तान को जीतकर भारत में प्रवेश किया। उसने बलोचिस्तान को जीतकर ईसा से 326 वर्ष पूर्व अटक के निकट सिंध नदी पार कर तक्षशिला में निवास किया। वहां उसे पता चला कि यहां आसपास ही अनेक दिगंबर जैन मुनि एकांत में रहकर तपस्या करते हैं। उसने मुनियों के तप, त्याग व ध्यानादि की प्रशंसा पहले ही सुन रखी थी। उसके मन में दिगंबर साधुओं के दर्शन की इच्छा प्रबल हो उठी। उसने अपने चतुर दूत अंशक्रतश को साधुओं के पास भेजा और कहा कि एक साधु को मेरे पास ले आओ।

अंशक्रतश ने तक्षशिला के बाहर एकांत में 15 दिगंबर साधुओं को देखा, वे या तो बैठे थे, या सूखी घास पर लेटे थे, वे शाम तक अपने आसनों से नही हिलते थे। अंशक्रतश ने साधु संघ के आचार्य दौलामस से कहा- महाराज, आपको बधाई हो, शक्तिमान देवता यानि परमेश्वर का पुत्र मनुष्यों का राजा सम्राट सिकन्दर आपको अपने पास बुलाता है। यदि आप उनका निमंत्रण स्वीकार कर उनके पास चलेंगे तो वे आपको बहुत ईनाम देंगे यदि नही चलेंगे तो वे आपका सिर काट लेंगे।

आचार्य दौलामस ने सूखी घास पर लेटे-लेटे ही मुस्कुराते हुए लापरवाही से उत्तर दिया-सबसे श्रेष्ठ राजा ईश्वर किसी की हानि नही करता, सिकन्दर देवता नही है क्योंकि एक दिन उसकी मृत्यु अवश्य होगी। उसके ईनाम हमारे लिए निरर्थक हैं। यदि सिकन्दर मेरा सिर काट डालेगा तो वह मेरी आत्मा को तो नष्ट नही कर सकता। सिकन्दर के दोनो अस्त्र आर्थिक लोभ व मृत्यु भय मेरे लिए शक्तिहीन व व्यर्थ हैं। हम न स्वर्ण चाहते हैं और न मृत्यु से डरते हैं। यदि सिकन्दर मुझसे मिलना चाहता है तो वह हमारे सामने आए। दूत ने आचार्य की बातें बडे ध्यान से सुनी और सिकन्दर को जाकर बतादी। आचार्य का निर्भीक उत्तर सुनकर सिकन्दर के मन में उनके दर्शन की इच्छा और भी प्रबल हो गई, उसने सोचा कि अनेक देशों पर विजय पाने वाला सिकन्दर एक वृद्ध साधु से परास्त हो गया।

उसके बाद सिकन्दर ने आचार्य दौलामस व अन्य मुनियों के श्रद्धापूर्वक दर्शन किए और उनसे बहुत प्रभावित हुआ। उसने उन साधुओं द्वारा अपने देश यूनान में धर्म प्रचार कराना उचित समझा। तदनुसार वह आचार्य दौलामस के संघ के एक शिष्य कल्याण मुनि (कौलानस Kalanos) से विनयपूर्वक मिला, उसकी प्रार्थना पर कल्याण मुनि ने यूनान जाना स्वीकार कर लिया।

तक्षशिला से यूनान लौटते समय कल्याण मुनि ने भी उनके साथ ही विहार किया। मार्ग में बाबीलान में 323 ईसापूर्व जून मास में दिन के तीसरे पहर 32 वर्ष 8 माह की आयु में सिकन्दर की मृत्यु हो गई। बताते हैं कि सिकन्दर की मृत्यु की भविष्यवाणी कल्याण मुनि ने पहले ही रास्ते में ही कर दी थी। अंतिम समय सिकन्दर ने कल्याण मुनि के दर्शन की इच्छा व्यक्त की थी, कल्याण मुनि ने उसे दर्शन देकर धर्म उपदेश दिया था।

कल्याण मुनि ने यूनान में खूब धर्म प्रचार किया और अंत में शांतिमय समाधि के साथ प्राण त्याग किए। उनका शव चिता पर रखकर सम्मान के साथ जलाया गया। ऐथेंस नगर में कल्याण मुनि के चरण-चिन्ह आज भी एक प्रसिद्ध स्थान पर अंकित हैं, जो पूजनीय हैं।

"कोना बाबा" के पास "माता मंदिर" में जैन तीर्थंकरों की प्राचीन प्रतिमाएँ

बरेली, खरगोन नगर (जिला रायसेन, म.प्र.) में वर्षों पूर्व भूगर्भ से प्राप्त श्री आदिनाथ भगवान जी की प्राचीन प्रतिमा जिसे स्थानीय गांव वाले "कोना बाबा" नाम से पूजते है, जमीन पर लेटी प्रतिमा को पुनः पद्मासन अवस्था में किया गया।

धर्मशालाओं का आधार-स्तम्भ बनेगी Dharmashala.in वेबसाइट

- नेहा जैन, पुणे

मंदिर भारतीय संस्कृति का अविभाज्य अंग हैं। प्राचीन भारत में मंदिर मात्र एक धार्मिक संस्था नहीं होते थे। मंदिर राज्य की अर्थव्यवस्था का मजबूत स्तंभ हुआ करता था। पूजा के स्थान के साथ-साथ राज्य के संसाधनों व संपत्ति का भंडार, धान्य का कोठार, विद्यापीठ, ग्रंथालय, धर्मशालाएँ, आरोग्य-सेवाएँ, जल संसाधन, मंडी, बाजार आदि का केंद्र हुआ करते थे। हालांकि अब इस वैश्वीकरण और शहरीकरण के काल में परिस्थितियाँ काफी बदल चुकी हैं पर फिर भी हम अपने उन क्षेत्रों के विकास का न्यूनतम स्तर उठाने के प्रयास तो जरूर कर सकते हैं।

मंदिर और तीर्थक्षेत्र तो हमारे जैन धर्म की अनमोल धरोहर हैं। जैन श्रावक अपने जीवन में कभी न कभी तो तीर्थयात्रा करता ही है किंतु क्या आधुनिकता के इस युग में हम लोग हमारे क्षेत्रों का पावित्र्य खो रहे हैं, हमारे कई क्षेत्रों का विकास रुका हुआ है। बहुत से क्षेत्रों की उपेक्षा हो रही है, कई क्षेत्र तो अन्य मतावलंबियों के कब्जे में चले गये हैं। ऐसे में हम लोगों को आगे आकर कुछ करना होगा। हमे हमारे क्षेत्रों की सुरक्षा करनी होगी इसके लिए हमें कुछ कदम उठाने होंगे।

क्षेत्रों पर सुधार के लिए कुछ कदम-

१. देश के सभी क्षेत्रों का समग्र डेटाबेस और नेटवर्क तैयार करने के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी ने धर्मशाला.इन (Dharmashala.in) के माध्यम से पहल की है।

२. क्षेत्रों की सुविधाओं और धर्मशालाओं का स्तर बड़े पैमाने पर सुधारने की आवश्यकता है ताकि लोग सादगी व सरलता के वातावरण में रहें व होटल जाने के बारे में न सोचें।

३. क्षेत्रों की धर्मशालाओं व यात्री निवासों पर स्वच्छता का मानक स्तर निर्धारित किया जाए। इसके लिए भारत सरकार के ***स्वच्छ आइकोनिक प्लेस अभियान*** में हिस्सा ले सकते हैं, इससे क्षेत्रों को लोकप्रियता व प्रसिद्धि मिलेगी।

४. क्षेत्रों पर व्रती श्रावकों, ब्रह्मचारी भाई बहनों, साधुओं के निवास के अनुकूल व्यवस्था हो, इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

५. कई क्षेत्रों पर श्रावकों के साथ-साथ विद्यार्थी, पर्यटक, विदेशी भी आते हैं तो हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि उनके सामने जैन धर्म के सिद्धातों की अधिक से अधिक प्रभावना व प्रचार प्रसार हो।

यात्री कैसे योगदान दें-

१. श्रावकों को हर वर्ष किन्हीं २-३ भ्रमण न किए गए तीर्थक्षेत्रों के दर्शन के लिए जाने का संकल्प लेना चाहिए। विशेष रूप से आँध्र, तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र व बंगाल।

२. जब भी हम तीर्थक्षेत्रों पर यात्रा के लिये जाएँ, तो क्षेत्र की धर्मशालाओं में ही रुकें और वहाँ की व्यवस्था के साथ सहयोग करें। धर्मशाला को व्रतियों व साधुओं का सान्निध्य मिलता रहता है इसलिए वहाँ विशुद्धि बनी रहती है जो होटलों में कभी नहीं मिल सकती है।

३. धर्मशालाओं की भोजनशालाओं में शुद्ध जैन भोजन की व्यवस्था मिलती है जबकि होटलों में यह संभव नहीं। होटलों में रहने का खर्चा भी धर्मशाला से कई गुना होता है इसलिए हमें क्षेत्रों पर ही रहने को प्रधानता देनी चाहिए इससे अपव्यय से बचा जा सकेगा व बचत को धार्मिक क्षेत्र पर दान देने का अवसर मिलेगा।

४. श्रावक लोग इस बात पर विचार करें कि हमारे क्षेत्रों के विकास की जिम्मेदारी हमारी है इसलिए क्षेत्रों की आवश्यकता के अनुरूप यथाशक्ति दान भी अवश्य करें व अन्य लोगों को भी प्रेरित करें।

५. हर श्रावक अपने जीवनकाल में किसी न किसी तीर्थक्षेत्र पर कम से कम २१ वृक्षों का रोपण करने का संकल्प ले। हर क्षेत्र पर हर वर्ष वर्षाकाल में यात्री मिलकर वृक्षारोपण का अभियान चलाएँ ताकि हमारे क्षेत्र हरियाली से लहलहाते रहें।

ये तीर्थक्षेत्र हमारी वास्तविक संपदा हैं इनकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। जैसे हमारे पूर्वजों ने हमें ये धरोहर सौंपी थी, उसी तरह हमें भी आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे संभालकर रखना है, तभी हमारा अस्तित्व सुरक्षित रह सकेगा क्योंकि धर्मो रक्षति रक्षितः जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।

श्रद्धांजलि

श्री विमल सोगानी (इंदौर) का निधन

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मध्यांचल के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री विमल सोगानी (इंदौर) का निधन दिनांक -9 मार्च 2021 को रात्रि में हो गया है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद्र जैन एवं राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा ने सोगानी जी के दुःखद निधन पर शोक प्रकट किया।

श्री सोगानी तीर्थक्षेत्र कमेटी के कर्मठ कार्यकर्ता थे और धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में सदैव सक्रिय रहते थे। मध्यांचल के तीर्थक्षेत्रों के विकास व जीर्णोद्धार में वे सदा सक्रिय रहे और निरंतर प्रयास करते रहे। मध्यांचल के तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण में उनकी भूमिका को सदैव ही याद किया जाएगा। वे मिलनसार व समन्वयवादी व्यक्ति थे, पंथवाद से दूर रहते थे, उनके निधन से कमेटी ने अपना एक महत्त्वपूण स्तंभ खो दिया।

बांग्लादेश में जैन धर्म

- मनीष जैन, उदयपुर (राजस्थान)

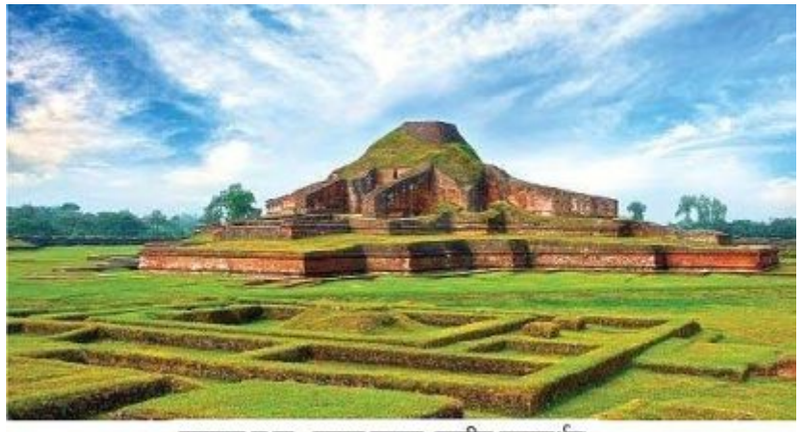

पुरातत्व स्थल - महास्थानगढ (प्राचीन पुण्ड्रवर्धन)

बांग्लादेश में जैन धर्म की एक व्यापक विरासत और इतिहास रहा है लेकिन आज यहाँ जैन साक्ष्य और धरोहर लगभग नहीं के बराबर ही बची हुई है, फिर भी जो कुछ भी मिला है या बचा है उसका उल्लेख ही इस लेख का आधार है।

जैन धर्म से बांग्लादेश (तब के पूर्वी अंग-बंग प्रान्त) की धरा का नाता प्रागैतिहासिक काल से ही रहा है। यद्यपि बांग्लादेश में पुरातात्विक उत्खनन बहुत ही कम हुआ है। कारण चाहे जो रहा होए फिर भी जैन धर्म से जुड़े अवशेष, प्रतिमाएँ और सामग्री कुछ स्थलों से प्राप्त हुई है। जिनमें से कुछ को राजशाही, दिनाजपुर, खुलना और ढाका के संग्रहालयों में प्रदर्शित किया गया है।

मध्यकाल के आक्रमणों और बाद के संघर्षों से जो क्षति यहाँ की जैन-अजैन धरोहरों को पहुँची थी, उसका आकलन नहीं किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अनधिकारिक रूप से जो कुछ मिला भी था, वो सामग्री वैध और अवैध तरीकों से विदेशी संग्रहालयों में भी चली गयी है। अतः यहाँ जैन धर्म के वास्तविक प्रभाव का आकलन अत्यंत कम स्तर पर ही हुआ है। बांग्लादेश के प्राचीन धरोहर स्थल जो जैन धर्म से संबंधित माने जाते है, उनमें से एक दिनाजपुर और दूसरा महास्थानगढ़ प्रमुख हैं।

ये स्थल समय की चोट के बाद भी अपनी गौरव गाथा कहते हुए से प्रतीत हो रहे है। वस्तुतः जैन धर्म बांग्लादेश में कुछ जैन मंदिरों के अवशेषों और संग्रहालयों में स्थित 8-10 जैन अवशेष प्रतिमाओं और कलाकृतियों तक ही सिमट गया है।

यहाँ के इतिहासविदों के अनुसार जैन धर्म 13वीं शताब्दी तक आज के बांग्लादेश की भूमि पर अच्छी अवस्था में था और बौद्ध धर्म तब भी प्रमुख धर्म बना हुआ था किंतु बाद में बाहरी आक्रमणों और पलायन के उपरांत ये धर्म यहाँ से प्रायः लुप्त से हो गए। बाद की सदियों में राजपुताना और गुर्जर प्रदेश से कई व्यापारी अवश्य चाय, धान और पटसन के व्यापार हेतु यहाँ बस गए और उनमें से अधिकांश जैन थे, जिन्होंने 1 या 2 प्राचीन जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार भी कराया और कुछ नवीन जैन चैत्यालय भी स्थापित किये।

1947 के विभाजन और दंगों के पश्चात उनमें से अधिकांश पलायन कर गए, फलस्वरूप नवीन जैन धरोहर भी मिट गयी या अवशेषों में रह गयी।

दिनाजपुर जैन मंदिर

बांग्लादेश में प्राप्त प्रामाणिक जैन स्थल

महास्थानगढ़ एलेग्जेंडर कनिंघम ने सबसे पहले १८७९ ईस्वी में महास्थानगढ़ नामक पुरातात्विक स्थल से जैन प्रतिमाएँ और सामग्री प्राप्त की थी, जो कि सन् १९१२ में वारेन्द्र रिसर्च संग्रहालय में स्थानांतरित कर दी गयी थी।

दिनाजपुर, दिनाजपुर कस्बे में पुरातन जैन मंदिर अभी भी विद्यमान हैं जिसकी प्रतिमाएँ वहाँ के संग्रहालय में रखी गयी हैं।

दमदमपीर, हाल के वर्षों में हुई खोज में सबसे महत्वपूर्ण खोज है दमदमपीर, जसोर (खुलना) से खुदाई में प्राप्त ७ इंच की जैन प्रतिमा। ये प्रतिमा **1800** वर्ष प्राचीन आँकी गयी है और ये बलुआ पत्थर (सैंडस्टोन) की मिट्टी से बनी हुई है और तीर्थंकर मल्लिनाथ को समर्पित है। इस प्रतिमा पर भगवान मल्लिनाथ लिखा हुआ पाया गया है। ये प्रतिमा तब मिली जब यहाँ एक टीले की खुदाई खुलना के पुरातत्व विभाग ने कराई थी,

टीले से प्राप्त जैन विहार - दमदमपीर

तीर्थंकर मल्लिनाथ प्रतिमा (श्वेताम्बर, टेराकोट्टा), जसोर (खुलना) से प्राप्त

बाद में इसे रोक दिया गया था और अभियान को गुप्त रखा गया था। ये प्रतिमा खुलना के राजकीय संग्रहालय में प्रदर्शित है।

पहाड़पुर. गाँव जिले के पहाड़पुर ग्राम से प्राप्त ताम्रपत्र लेख जो कि **5**वीं सदी का है, उसमें भी ग्राम वटागोहली में एक बड़े जैन विहार का उल्लेख है। पहाड़पुर में **1980-1981** में हुई खुदाई में **8**वीं सदी से पहले का एक विशाल ढाँचा नज़र आया है, जिसे पुरातत्वविदों ने जैन विहार का ढाँचा माना है, आगे खुदाई अभी नहीं हो पायी है।

· **बोगरा और मेहरपुर -** इसके अलावा दो जैन मंदिर जिनमें से एक बोगरा कस्बे के सतमाता इलाके में है और दूसरा मेहरपुर क़स्बे की बक्शी लेन में है, ये दोनों मंदिर अभी भी विद्यमान हैं। ये वो मंदिर हैं जिन्हे **19**वीं सदी में गुजरात के जैन व्यापारियों ने बनाया था।

· **लालमई -** इसके अतिरिक्त कोमिल्ला कस्बे के पश्चिम में स्थित लालमई पर्वत श्रृंखला से भी मिट्टी की प्रतिमाएँ और चट्टान में उकेरी गयीं कुछ अपूर्ण जैन प्रतिमाएँ मिली हैं।

बांग्लादेश के संग्रहालयों में जैन धरोहर

· बांग्लादेश के राजशाही, दिनाजपुर, खुलना और ढाका के संग्रहालयों में विभिन्न स्थलों से प्राप्त जैन धरोहरें प्रदर्शित हैं, इनमें से निम्न मुख्य हैं-

१. खड्गासन महावीर स्वामी प्रतिमा, श्याम वर्ण, **73.6** सेमी, **10-11** शताब्दी, बांग्लादेश राष्ट्रीय संग्रहालय ढाका

२. खड्गासन पार्श्वनाथ स्वामी प्रतिमा, श्याम वर्ण, **60.9** सेमी, **10-11** शताब्दी, दिनाजपुर संग्रहालय

३. खड्गासन तीर्थंकर प्रतिमा, श्याम वर्ण, **93.9** सेमी, **9-10** शताब्दी, दिनाजपुर संग्रहालय

४. खड्गासन शांतिनाथ स्वामी प्रतिमा, श्याम वर्ण, **65** सेमी, वारेन्द्र शोध संग्रहालय, राजशाही

५. खड्गासन ऋषभदेव स्वामी प्रतिमा, श्याम वर्ण, **10-11** शताब्दी मेदिनीपुर से प्राप्त

६. खड्गासन पार्श्वनाथ स्वामी प्रतिमा, श्याम वर्ण, **11** शताब्दी, बांकुरा से प्राप्त

पुरातत्व स्थल - पहाड़पुर

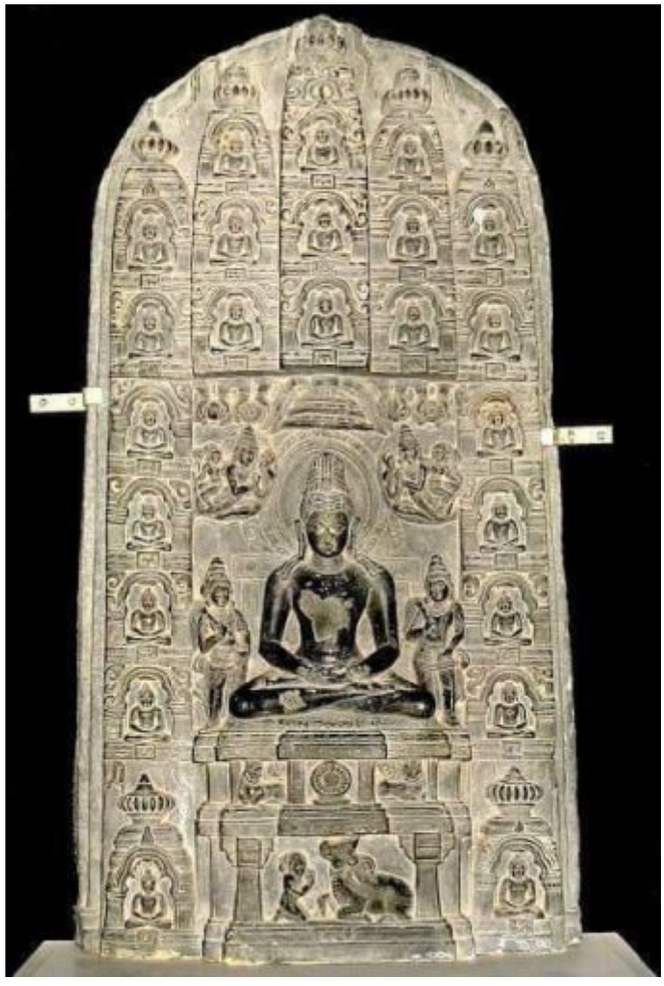

७. खड्गासन पार्श्वनाथ स्वामी प्रतिमा, श्याम वर्ण, **11** शताब्दी, **24** परगना से प्राप्त

८. पद्मासन ऋषभदेव स्वामी प्रतिमा, श्याम वर्ण, **99** सेमी, **10-11** वारेन्द्र शोध संग्रहालय, राजशाही

९. मल्लिनाथ स्वामी सैंडस्टोन प्रतिमा, ७ इंच, खुलना संग्रहालय

बांग्लादेश का जैन इतिहास

१. महास्थानगढ़ से विश्व की प्राचीन नगरीय सभ्यताओं में से एक पुरातन नगरीय सभ्यता के अवशेष मिले हैं। ये नगर और कोई नहीं पुण्ड्रवर्धन प्रान्त की राजधानी पुण्ड्रनगर ही था, जिसकी पुष्टि पुरातत्वविदों ने की है। पुण्ड्रवर्धन ही वो प्रान्त था, जहाँ अंतिम श्रुत केवली भद्रबाहु स्वामी का जन्म हुआ था और जो सम्राट चन्द्रगुप्त के आध्यात्मिक गुरु थे। 7 वीं सदी में जब चीनी यात्री **ह्वेन त्सांग** भारत आया था, तब वो पुण्ड्रवर्धन आया था और उसने अपनी डायरी में उस समय इस नगर में उपस्थित नग्न जैन मुनियों का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त उसने समनन्तता नगर के जैन मुनियों का भी उल्लेख किया है। पुण्ड्रवर्धन आज के बांग्लादेश के उत्तरी भाग में तथा समनन्तता दक्षिणी भाग में अवस्थित था। पुण्ड्रवर्धन और आचार्य भद्रबाहु के बारे में **बोधिसत्व वंदना कल्पलता** नामक बौद्ध ग्रन्थ में भी उल्लेख मिलता है। इसके अनुसार मौर्यकाल में पुण्ड्रवर्धन और समूचे बंगाल में जैन धर्म ही प्रमुख धर्म था, जिसके नेता भद्रबाहु थे। भद्रबाहु के उपरांत उनके एक शिष्य गोदस को पुण्ड्रवर्धन संघ का नेता बनाया गया, जिसके शिष्य गोदसगण कहलाये। बाद में गोदसगण 4 अन्य संघ में विभक्त हो गए जिनके नाम थे-

१. ताम्रलिप्तिकीय,
२. कोटिवर्षीय,
३. पुण्ड्रवर्धनीय और
४. धाशीकरवाटिका।

सन् 1586 में एक ब्रिटिश व्यापारी राल्फ फिच जो कि बंगाल आया था, ने भी अपनी डायरी में सोनार गाँव के कुछ जैन व्यापारियों का उल्लेख किया है। इन सबसे ये सिद्ध होता है कि सदा ही कम या अधिक संख्या में जैन धर्म के अनुयायी आज के बांग्लादेश में रहे थे और जिन्होंने जैन संस्कृति का पालन किया और जैन धर्म और इसकी धरोहरों का सृजन व संवर्द्धन किया।

बंगाल, झारखण्ड, ओडिशा के सराक जैनों के लिए अर्हम् योग व जैन-धर्म प्रशिक्षण शिविर

जैन-धर्म भारत का मूलधर्म रहा है, भारत के चारों कोनों में एक समय करोड़ों जैन थे,जिन्हें आज अन्य कई धर्मों में धर्मान्तरित कर दिया गया है, ऐसे ही एक जैन समुदाय है "सराक"। सराक पूर्वांचल में जैन-धर्म के जीवन्त प्रतीक रहे हैं। यह पश्चिम बंगाल, झारखंड, आंध्र प्रदेश, ओडिशा के गांवों में फैले हुए हैं, इनकी संख्या लाखों में है, यह इस क्षेत्र के मूल जैन रहे हैं। सराक शब्द संस्कृत के श्रावक का अपभ्रंश है। सैकड़ों वर्षो तक दिगंबर मुनिराजो का समागम ना मिलने के कारण और वैदिक राजाओं के अत्याचारों से यह जैन-धर्म से दूर हो गए, आज भी जहां सराक जैन है उन गांवों के आसपास में तीर्थंकरों की दिगम्बर जैन प्रतिमाएं यत्र-तत्र बिखरी है।

तीर्थंकर ऋषभदेव के "खेती करो या ऋषि बनो" के सिद्धांत को अपनाते हुए यह आज भी खेती-बाड़ी करके आजीविका कमाते हैं, सर्वप्रथम गणेशप्रसाद वर्णी, जिनेन्द्र वर्णी, ब्र. शीतल प्रसाद जी आदि विद्वानों ने इनको जैन-धर्म की मूलधारा में जोड़ने का प्रयास किया। पश्चात् आचार्य विद्यासागर जी ने ईसरी चातुर्मास के समय इनके लिए शिविर आदि लगवाए व इनके गांवों से विहार करके खंडगिरि-उदयगिरि की ओर विहार किया। पश्चात् सराकोद्धारक आचार्य ज्ञानसागर जी ने इनके उद्धार का प्रयास शुरू किया। जो आज तक जारी है।

आचार्यों ने कहा है 'न धर्मो धार्मिकैर्विना।' बिना अनुयायियों के धर्म भी नहीं चल सकता, हमें कम से कम हमारे पुराने बिछड़े जैन बंधूओ को मूलधारा में लाने का प्रयत्न तो करना ही चाहिए। आचार्य श्री विद्यासागर जी ने एक बार स्व.पंडित रतनलाल जी बैनाडा को नियम दिलवाया था कि हर साल एक नए व्यक्ति को जैन संस्कार देकर जैन बनाना,इसका बहुत पुण्य लगता है। इसका उल्लेख पंडित जी कई स्थानों पर करते थे। हमें अर्हम् योग शिविर, संस्कार शिविर, शिक्षा-रोजगार में सहयोग जिनालय निर्माण, सराक क्षेत्र के जिनालयों की वंदना, दिगंबर मुनिराजों से सराक बंधुओं को जोड़कर आदि विभिन्न तरीकों से अपने साधर्मियों को जैन धर्म की मूलधारा में सम्मिलित करना चाहिए।

सराक लोग आज भी गरीबी का जीवन जी रहे हैं, पर जैन नियमों का पालन करते हैं। शाकाहारी, रात्रि-भोजन त्याग, गृहशुद्धि आदि का यह पूरा ख्याल रखते है, अब कई स्थानों पर नवीन दिगंबर जिनालयों का निर्माण व प्राचीन जिनालयों का जीर्णोद्धार भी हुआ है, साथ में महिलाओं की आजीविका हेतु सिलाई सेंटर, छात्रों के लिए पाठशाला, कोचिंग सेंटर आदि कुछ स्थानों पर चल रहे है पर यह उनकी संख्या के हिसाब से अपर्याप्त है, हमें भी साधर्मिक सराक भाईयों के उत्थान हेतु आगे आना चाहिए। अपने कारखानों में, जैन तीर्थ क्षेत्रों पर नौकरी देकर, सरकारी योजनाओँ का लाभ दिलवाकर, इनके लिए धार्मिक एवं लौकिक शिक्षा की व्यवस्था करकर आदि अनेको माध्यमों से हम मुख्यधारा में शामिल जैनों को चाहिए कि इन सराक भाइयों को भी वापस मुख्यधारा शामिल करने के लिए हर संभव प्रयास करें। परम मुमुक्षु प्रणम्यसागर मुनिराज के सान्निध्य में हस्तिनापुर में लगने वाले अर्हम् योग शिविर के माध्यम से सराक भाइयो को परम उपकारी मुनि श्री १०८ प्रणम्यसागर मुनिराज से आशीर्वाद लेने एवं जैन समाज से जुड़ने का एक बार फिर से स्वर्णिम अवसर मिला है।

जहाँ दवा काम नहीं आती है वहां दुआ काम आती है : आचार्य विमदसागर

जहां दवा काम नहीं आती है वहां दुआ काम आती है, क्यों न पहले से ही दुआ ले लें जिससे दवा की आवश्यकता ही न पड़े। एक सच्ची घटना है आचार्य श्री महावीर कीर्तिजी मुनि महाराज के समक्ष की। संभवतः घटना केशरियाजी के आसपास की है। आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी के कानों में आवाज पड़ती है- "राम नाम सत्य है', वे पूछते हैं यह कैसी आवाज आ रही है? उन्हें बताया जाता है- एक 22-23 वर्ष के नौजवान का देहान्त हो गया है, उसका दाह संस्कार करने श्मसान घाट ले जा रहे हैं, आचार्य महाराज ने कहा वह नौजवान अभी मरा नहीं है, उसे यहाँ ले आयें। उसे लाते हैं, उसके पिता के हाथों उसका कफन हटवाया जाता है। आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी अपने कमण्डलु से चुल्लू में जल लेकर उसके ऊपर छिड़कते हैं और पिच्छी उठाकर उसे आशीर्वाद देते हैं, वह नौजवान मृत्युशैय्या से उठकर खड़ा हो जाता है, चारों ओर जयकारे के नारे गूँज उठते हैं।

जब किसी का रोग असाध्य हो जाता है, डॉक्टर भी कह देता है मेरे पास अब इसका उपचार नहीं बचा है आप भगवान से दुआ कीजिये, और वाकई कभी कभी यह दुआ, सन्तो का आशीर्वाद काम कर जाता है। ऐसी अनेक घटनाएँ हुई हैं जब अस्पतालों से किसी मरीज को जवाब दे दिया गया हो और सन्तों की शरण में उसका रोग चमत्कृत रूप से ठीक हो गया, आगे वह व्यक्ति वर्षों तक जीवित रहा। ये विचार दिनांक 27 फरवरी २०२१ को खातीवाला टैंक इन्दौर में श्रमणाचार्य श्री विमदसागर जी मुनिमहाराज व्यक्त किए।

ज्ञान से अधिक ध्यान की आवश्यकता है : आचार्य विद्यासागर

नेमावर। ज्ञान से अधिक ध्यान की आवश्यकता है। ध्यान से पढ़ें, सुनें तो फिर पुस्तकों की अधिक आवश्यकता नहीं। रास्ता तो बताते जा रहे, पर रास्ते पर चलने वाले नहीं तो प्रश्नचिह्न लगता है। ऐसे में ज्ञान से ज्यादा ध्यान पर चिंतन करना है। ज्ञेय पर ध्येय रखना है। ध्येय पाने योग्य और ध्यान रखने योग्य होता है। यह भारतीय शिक्षा का लक्ष्य रहा है। पर बीच में कर्मों के अतिरेक से लंबी ठोकर लगी है। वह ठोकर एक बार में ठीक नहीं होगी। भीतर से सेंक कर रक्तस्राव को गतिशील करना होगा। रक्त का संचार लगातार बढ़ता या चलता रहना चाहिए। न धीमे न तेज रक्त संचार हो। यह ठीक होने से स्वप्न भी ठीक आते हैं। यह शुभ माना जाता है। पर जिस निद्रा में बेहोशी है वह ठीक नहीं। इसलिए हमारा ज्ञान सही काम कर रहा है तब कहना पड़ेगा कि ध्यान की ओर लक्ष्य है। ज्ञेय भी विषय बन जाता है। पहले बच्चों को मुखाग्र करने का कार्य दिया जाता था। उसका यही लक्ष्य रहता था। श्लोक को मुखाग्र करने पर एक-एक चरण को ध्यान कर लेता था, फिर एकांत में, ध्यान में अपने आप ध्यान आ जाता है कि गुरुजी ने किस ओर इशारा किया था।

नेमावर तीर्थ के कार्यकारी पदाधिकारी श्री संजय मैक्स एवं आलोक जैन ने विद्वत् परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज' को बताया कि ये प्रवचन वसंतपंचमी के दिन नेमावर में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज ने प्रतिभास्थली की छात्राओं और श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहे। आचार्यश्री ने आगे कहा कि प्रतिभासंपन्न व्यक्ति को कहा जाता है आंखें बंद कर लो, कान का उपयोग सही करो तो ध्यान संयत हो जाता है। दो कान अच्छे हैं पर आप लोगों की दुकान अलग प्रकार की है। हीरा कहीं भी रखो, अपना प्रभाव दिखाता रहता है। हमें माल खरीदना है, धन नहीं खरीदना है। धन में प्रतिशत पर माल में शत प्रतिशत। हीरा अपनी कीमत बताता रहता है, खरीदने वाला भी मालामाल हो जाता है। विज्ञापन का इतना महत्व नहीं।

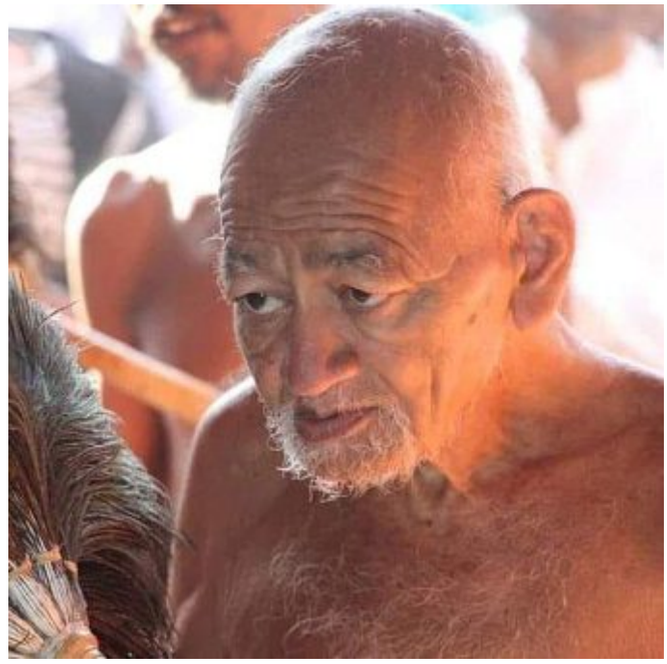

ज्ञान में कितने पहलू हैं। वह ध्यान से उद्घाटित हो जाता है। हीरे की झिल्ली से मूल्य देखने में आता है। किसी ने हीरा पहन रखा हो तो उसका पूरा मुख ही उजला झलकने लग जाता है। आप धर्म प्रभावना के कारण नहीं, सामान्य आचरण में भी यह बरकरार रखना चाहिए, फिर पढ़ने की ज्यादा आवश्यकता नहीं, वह अपने आप दिखने लगता है।

भारत संस्कार और संस्कृति की भूमि : आचार्यश्री विद्यासागर जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यवाह श्री सुरेश सोनी गुरुवार (11 मार्च) को जैन तीर्थ सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर में विराजित राष्ट्रीय संत आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शनार्थ पहुंचे। सोनी ने आचार्यश्री जी को श्रीफल समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। दोनों के मध्य राष्ट्रहित, जनहित, हिंदी, खादी, हथकरघा एवं भारतीय संस्कृति सहित अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर लगभग डेढ़ घण्टे तक चर्चा हुई। जैन समाज के प्रवक्ता नरेंद्र चौधरी व पुनीत जैन ने बताया कि चर्चा के दौरान आचार्य श्री ने कहा कि विदेशी शिक्षा और विदेशी भाषा के कारण संस्कृति और संस्कार दोनों ही दूर होते जा रहे हैं। इस आधुनिक युग में सर्वाधिक पतन नैतिक शिक्षा का हुआ है। पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करने से हम अपनी संस्कृति और संस्कार को भूल रहे हैं। भारत ही ऐसी जगह है जहां संस्कृति और संस्कार दोनों मिलते हैं। हमें अपनी भारतीयता और अपनी संस्कृति का गौरव होना चाहिए। विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जहां अपनी भूमि-अपनी मिट्टी को मातृभूमि कहा जाता है और मां की तरह पूजा जाता है। हम जिस प्रकार मातृभूमि से स्नेह करते हैं उसी प्रकार हमें मातृभाषा से भी लगाव होना चाहिए। हमारी भाषा हिंदी है आज भारत देश में लगभग 70 प्रतिशत से अधिक स्थानों पर हिंदी बोली जाती है। अंग्रेजी या किसी अन्य विदेशी भाषा का विरोध नहीं है, लेकिन प्राथमिकता हिंदी ही होना चाहिए। आचार्य श्री जी ने कहा कि हथकरघा और खादी हमारे देश की प्रमुख पहचान है। आज भारत को इंडिया छोड़, पुनः भारत की ओर लौटना होगा। हमारी मूल पहचान ही भारतीयता के नाते है।

इस अवसर पर सुरेश सोनी ने कहा कि ऐसे ही संतों के मार्गदर्शन से भारत, भारत है। इन्हीं संतो के आशीर्वाद से हमारी संस्कृति, धर्म और भारत सुरक्षित है। आचार्य श्री से जो मार्गदर्शन मिला है उस पर अमल जरूरी है। भारत बने भारत, एक भारत-श्रेष्ठ भारत के लिए सामूहिक जागरण जरूरी है।

विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल श्री सम्मेदशिखरजी के दर्शनार्थ पधारे गिरिडीह जिला के न्यायाधीश

दिनांक 28 फरवरी 2021 को गिरिडीह जिला के न्यायाधीश श्री रमेश चन्द्र जी व श्री विनोद कुमार जी सपरिवार एवं अधिवक्ता श्री रूपेश कुमार सिन्हा के साथ शिखरजी के मंदिरों के दर्शन-पूजन करने हेतु पधारे। वे श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट के शाश्वत विहार (निहारिका) पहुँचे, जहां उन्होने श्री कलश मंदिर में दर्शन- किया, इस अवसर पर भारतवर्षीय

दिगबम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई व ट्रस्ट के अधिकारियों ने सभी आगन्तुंकों को तिलक कर व दुपट्टा ओढ़ाकर स्वागत किया, साथ ही न्यायाधीश महोदय को ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार जैन अजमेरा जी ने ट्रस्ट की प्रतीक चिह्न भेंट किया। कमेटी के वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमन कुमार सिन्हा, ट्रस्ट के वरिष्ठ प्रबंधक श्री प्रदुमन कुमार जैन, प्रबंधक श्री संजीव जैन, सुजीत सिन्हा, ए. सैदी, श्री गंगाधर महतो, श्री अशोक दास, श्री शैलेन्द्र जैन, प्रियनाथ, रोबिन बनर्जी, मुकेश, पवन, श्री पवन शर्मा, विष्णु कुमार आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, पावागढ़ में वार्षिक ध्वजारोहण

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, पावागढ़ में वार्षिक ध्वजारोहण दिनांक 25-2-2021, गुरूवार के दिन सीमित संख्या में उपस्थित श्रावक- श्राविकाओं की उपस्थिति में किया गया। पर्वत पर स्थित छह मंदिरों एवं तलहटी के दो मंदिरों के शिखरों पर ध्वजारोहण किया गया। दोपहर के 3-00 बजे रथयात्रा निकाली गई।

1000 वर्ष प्राचीन मंदिर जो देवलोक से उड़कर यहाँ पहुँचा

मंदिरों में स्थापित मूर्तियों के चमत्कारों की कथाएँ तो आपने कई बार सुनी होगी लेकिन क्या आप मध्य प्रदेश के इस प्राचीन मंदिर के बारे में जानते हैं? कहा जाता है कि १००० वर्ष प्राचीन इस मंदिर को कभी किसी ने बनवाया नहीं, बल्कि ये देवलोक से उड़कर यहाँ पहुँचा है। वैज्ञानिक भी आज तक इस रहस्य का पता नहीं लगा सके हैं कि बिना नींव के भारी दीवारों वाला यह मंदिर यहाँ कैसे स्थापित हुआ

मध्यप्रदेश के इंदौर शहर की देपालपुर तहसील के बनेड़िया गांव में स्थित श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बनेड़िया जी जैनियों के प्रमुख तीर्थस्थल में शामिल है। इस मंदिर से जुड़ी प्राचीन कथा इसे चमत्कारी बनाती है। कहा जाता है कि ये मंदिर यहाँ प्रकट हुआ था इसे बनवाया नहीं गया। इस बात की सच्चाई जानने के लिए मंदिर की खुदाई करवाई गई तो लोग चौंक गए। खुदाई में कहीं भी पक्की नींव का पता नहीं चला। बिना किसी ठोस नींव के यहाँ स्थापित इस अष्टकोणीय भव्य मंदिर में एक भी खंभा नहीं है और मंदिर की दीवारें ६ से ८ फीट चौड़ी हैं।

चौथे काल की प्राचीन पाषाण प्रतिमाएँ

मंदिर के निकट रहने वाले संजय जैन ने बताया कि हम छ: पीढ़ियों से इस मंदिर की सेवा में जुटे हैं। पूर्वजों से यही सुना है कि एक तपस्वी मुनिराज इस मंदिर को लेकर कहीं जा रहे थे, किसी कारणवश उन्होंने मंदिर को यहाँ रखा और तपस्या करने लगे, शाम हो गई तो मंदिर यहीं स्थापित हो गया। तब से यह मंदिर यहीं है। मंदिर में भगवान अजितनाथ जी की प्रतिमा स्थापित है। इसके अलावा मणिभद्र बाबा क्षेत्रकाल भी यहाँ है। यहाँ सफेद पाषाण की कई प्राचीन मूर्तियाँ भी हैं जिन पर १२४८ संवत् विक्रम का समय अंकित है। ये मूर्तियाँ चौथे काल की बताई जाती हैं।

प्रतिमाह पूर्णिमा की पूजा का है महत्व

मंदिर को संभाल रहे गंगवाल परिवार के अनिल गंगवाल ने बताया कि ये भारत का एकमात्र अतिशय क्षेत्र है जिसकी नींव नहीं है। पुजारी ने बताया कि यहाँ हर पूर्णिमा को विशेष पूजा होती है और मेला लगता है जिसमें देश के

कोने-कोने से श्रद्धालु शामिल होते हैं। मान्यता है पूर्णिमा को यहां पूजा में शामिल होने से हर कामना पूरी होती है। इसी मान्यता के चलते कई श्रद्धालु लगातार ७, ८ या १५ पूर्णिमा तक यहाँ आते हैं।

४ फीट ऊंची भगवान अजितनाथ जी की प्रतिमा

इस भव्य प्राचीन मंदिर के पास एक बड़ा तालाब है। मुख्य मंदिर गोलाकार है जिसमें भगवान अजितनाथ जी की लगभग ४ फीट ऊँची प्रतिमा स्थित है। इस मूर्ति के अलावा भी मंदिर में कई प्राचीन मूर्तियाँ मौजूद हैं। जिनमें भगवान आदिनाथ, चंदप्रभु, पार्श्वनाथ और शांतिनाथ जी की मूर्तियाँ शामिल है। मूल प्राचीन मंदिर को श्रद्धालुओं ने भव्य मंदिर का रूप दे दिया है। मंदिर तक पहुँचने के लिए इंदौर से बस या कार या बाइक किसी को भी चुना जा सकता है। इंदौर से ४५ किमी दूर देपालपुर है और देपालपुर से ४ किमी की दूरी पर स्थित है यह दिव्य चमत्कारिक मंदिर।

समवशरण की रथ यात्रा मांडलगढ़ पहुंची, मुनि संघ की भव्य अगवानी

तपोदय तीर्थ बिजौलियाँ से मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज संघ के सान्निध्य में चल रही गगन बिहारी पार्श्वनाथ भगवान की रथ यात्रा और संतों की विहार यात्रा का शनिवार को **मांडलगढ़** में प्रवेश हुआ। जहां जैन समाज सहित सभी समाज के लोगों ने यात्रा का स्वागत किया। यात्रा में २३ फीट ऊंची और २२६ कमल से सुशोभित पार्श्वनाथ भगवान प्रतिमा की गगन विहारी प्रतिकृति भी यात्रा में शामिल है। प्रतिमा एक ट्रॉले में विराजित थी, इनके पीछे सौधर्म इंद्र-इंद्राणियां बग्गी चल रहे थे।

यात्रा में सबसे आगे हाथी के ऊपर जैन ध्वज लिए श्रावक बैठे हुए थे। उनके पीछे बैंडबाजे वादक भजनों की मधुर स्वर लहरियां बिखेर रहे थे। इनके पीछे अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा परिषद, एकता मंच, राजस्थान जैन युवा महासभा, सामूहिक जिनेंद्र आराधना ग्रुप, महिला मंडल, युवा मंडल, जैन सोशल ग्रुप के सदस्य हाथों में केसरिया झंडे लिए चल रहे थे। मुनि संघ के मंगल प्रवेश के मार्ग में जैन सहित अन्य समाज के लोगों ने कस्बे में जगह-जगह स्वागत द्वार बनाए। जहां लोगों ने मुनि संघ के पग प्रक्षालन व आरती के साथ अगवानी की। मंगल प्रवेश पर शोभायात्रा में शामिल श्रद्धालु जयघोष करते चल रहे थे। मुनिश्री का मंगल प्रवेश पर कस्बा स्थित डाक बंगले के पास मुख्य द्वार पर मंदिर कमेटी के पदाधिकारियों ने स्वागत किया।

मंगल प्रवेश पर मुनिश्री के स्वागत में उपस्थित रहे जनप्रतिनिधि

मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल, पूर्व विधायक विवेक धाकड़, पूर्व जिला प्रमुख शक्ति सिंह हाडा, पंचायत समिति प्रधान सतीश जोशी, पूर्व प्रधान मांडलगढ़ गोपाल मालवीय, नगर पालिका अध्यक्ष संजय डांगी, कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष सत्यनारायण जोशी, खनन व्यवसायी जगदीशचंद्र खंडेलवाल, अनीता सुराणा, नगरपालिका उपाध्यक्ष जफर टांक सहित प्रशासन व पुलिस के अधिकारी भी मुनिश्री के स्वागत में उपस्थित रहे। उपखंड अधिकारी उत्साह चौधरी, तहसीलदार सुरेंद्रसिंह चौधरी, पुलिस उप अधीक्षक ज्ञानेंद्र सिंह राठौड़, अधिशासी अभियंता इंद्रजीत सिंह मीणा, मांडलगढ़ थाना अधिकारी नेमीचंद चौधरी, बिजौलिया थानाधिकारी सूर्यभान सिंह, बीगोद थानाधिकारी जसवंत सिंह भी उपस्थित थे।

अभूतपूर्व स्वागत हुआ महुआ में

भगवान पार्श्वनाथ स्वामी गगंन विहार यात्रा महुआ नगर में शानदार स्वागत हुआ जिले के सभी राजनेताओं के साथ समाजिक धार्मिक कार्यकर्ताओं ने अपूर्व उत्साह दिखाते हुए जय जयकार, स्वागत वदंन, तोरण द्वारों, रंगोली व झांकियों से बहुत ही सुन्दर बनाते हुए अंहिसा व शान्ति का सन्देश दिया। इस अवसर पर कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव पूर्व विधायक धीरज गुर्जर, प्रदेश कांग्रेस कमेटी सचिव विवेक धाकड़, विधायक खंडेलवाल, उदयपुर के उप

महापौर पारस सिंघवी उपस्थित थे।

अज्ञानी और पुण्य हीन भगवान के दर्शन से दूर रहते हैं

मुनि श्री सुधासागर जी महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा कि जिनेन्द्र भगवान के मात्र दर्शन से ही नहीं, उनकी शोभायात्रा से असीम पुण्य मिलता है। देवता भी धर्म प्रभावना से आनंदित होते हैं, अज्ञानी और पुण्य हीन भगवान के दर्शन नहीं कर सकता। भगवान जिन पर दया करता है उनके घर जाकर दर्शन दे देता है।

मनुष्य परिस्थिति का दास नहीं है

मुनि पुगंव ने कहा कि मनुष्य परिस्थितियो का दास नहीं है परिस्थितियो का नियत्रा वनना है हम परिस्थितियों को अपने अनुकुल वनाकर सब के लिए उपयोगी वनायेगे।

जिस माटी पर गुरु के चरण पड़ जाये वह माटी तीर्थ वन जाती है पहले के लोग नंगे पैर पदयात्रा किया करते थे जितने चीजें तुम्हारे और प्रकृति के वीच होगे उतनी ऊर्जा कम मिलेगी।

मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज तीर्थंकर श्री पारसनाथ स्वामी की जन्म स्थली पहुँचे

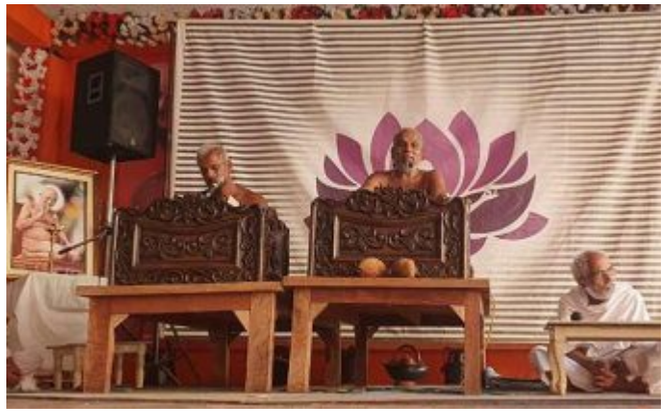

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज स संघ ने जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान श्री पारसनाथ स्वामी की जन्म स्थली वाराणसी 1 मार्च को भेलूपुर पहुँचे हैं।

3 मार्च २०२१ को मान स्तंभ के भगवान का मस्तकाभिषेक रखा गया था। मुनिसंघ मार्च के अंतिम सप्ताह में मोक्ष स्थली श्री सम्मेदशिखर जी पर पहुंचेंगे।

सत्य, अहिंसा की स्थापना के लिए पूरे भारत की पदयात्रा करने निकले दिगंबर जैन मुनियों का संघ सोमवार की सुबह काशी पहुंचा। मड़ैला मोड़ पर पहुंचे भक्तों ने मुनियों के काफिले का जयकारों के साथ भव्य स्वागत किया। वहां से अहिंसा रथ, हाथी-घोड़े, बैंड बाजा, ताशा, झंडी-झंडों के दिव्य समूह के साथ लोगों ने शोभायात्रा निकाली, जयकारे लगाते, नाचते-गाते, झूमते मडुआडीह महमूरगंज होते अरिहंत डायग्नोस्टिक सेंटर पहुंचे। वहां भी श्रद्धालुओं ने मुनियों का पद प्रक्षालन करते हुए उनका आशीर्वाद लिया। सुप्रसिद्ध जैन मुनि संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी के परम प्रभावक मुनि श्री 108 प्रमाण सागरजी महाराज (ससंघ) एवं मुनि श्री 108 अरह सागर जी महाराज के नेतृत्व में पहुंचा पदयात्री मुनियों का यह संघ भक्तों के साथ रथयात्रा, कमच्छा होते हुए भगवान पार्श्वनाथ की जन्मस्थली भेलूपुर पहुंचा। श्री दिगंबर जैन समाज काशी के तत्वावधान में मंदिर में विविध धार्मिक अनुष्ठान आरंभ हुए। इस दौरान सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था देखने को मिली।

इसके पूर्व मंदिर में प्रवेश करते हुए मुनिश्री ने दर्शन पूजन एवं शांति धारा में भाग लिया। इसके बाद धर्मसभा का शुभारंभ मंगलाचरण नृत्य एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। सायंकाल विश्व प्रसिद्ध शंका समाधान का कार्यक्रम हुआ। लाइव टेलीकास्ट के इस कार्यक्रम में पूरे देश से लोगों ने प्रश्न किए। मुनश्री ने उनकी समस्याओं का निदान बताया और जिज्ञासाओं को शांत किया। कार्यक्रम का संचालन पंडित डा. कमलेश जैन शास्त्री ने किया। इस मौके पर दीपक जैन, राजेश जैन, सौरभ जैन, प्रमिला सांवरिया, तरुण जैन, विनोद जैन, आकाश जैन आदि थे।

अहम् की आहुति देना चाहते हो तो झुकना सीखो, पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी में हुआ धर्मसभा का आयोजन

अहंकारी को अपनी उपस्थिति दर्ज करानी पड़ती है और विनम्रता स्वयं व्यक्ति की उपस्थिति बता देती है। अहम् की आहुति देना चाहते हो तो झुकना सीखो। धर्म करना लक्ष्य नहीं अपितु धर्म को अंतर में उतारना लक्ष्य होना चाहिए। जो मन के वश में होते हैं वे संसार में हारते हैं, जो मन को वश में कर लेते हैं वही जीतते हैं। जीवन जीने के ये महामंत्र दिए दिगंबर जैन समाज के मुनि श्री 108 प्रमाण सागरजी ने। मुनिश्री काशी पहुंचने के बाद भगवान पार्श्वनाथ की जन्मस्थली पर भक्त समुदाय को संबोधित कर रहे थे।

उत्तर प्रदेश सरकार के राजकीय अतिथि मुनिश्री ने आगे कहा कि भगवान पार्श्वनाथ की इस जन्मभूमि पर हम सब एकत्र हैं। वह एक ऐसे तीर्थंकर जो उपसर्ग विजेता थे। वह अपार कष्ट देने वालों को क्षमा ही नहीं करते थे अपितु उससे भी क्षमा माँगते थे। हमें मंदिर में उनके सिर्फ दर्शन पूजन नहीं करना है, वरन उनके बताए हुए मार्ग का अनुसरण करना है।

श्री विशुद्ध सागर जी महाराज की बिहार यात्रा पर विशेष साक्षात्कार

जो पुरातात्विक सम्पत्ति जैनों के पास वह किसी और के पास नहीं : आचार्य विशुद्ध सागर महाराज

अध्यात्मयोगी चर्या शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज का भगवान महावीर स्वामी के जन्म, तप, ज्ञान और निर्वाण भूमि नालंदा की धरती पर निर्ग्रन्थ मुनियों की बिहार यात्रा और कोरोना संकट पर प्रथम बार साक्षात्कार लिया।

आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज बाल्यकाल में ही जगत के राग-रंग से वैराग्य लेकर महज 17 वर्ष की अल्पायु में ही गृह त्याग कर दीक्षा ग्रहण की। ये जन-जन को उन्मार्ग से सन्मार्ग बताने वाले तपस्वी संन्यासी के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने दीक्षा के उपरांत अब तक कुल 75000 किलोमीटर पद यात्रा की है।

बिहार का जैन दर्शन में महत्व पर चर्चा में आचार्य विशुद्ध सागर महाराज ने कहा कि तीर्थंकर भगवंतों की कल्याणक भूमि बिहार प्रांत है अगर हम जैन दर्शन से बिहार को अलग रखते है तो जैन धर्म की बहुत सारी व्याख्या अधूरी रह जाएगी। अनंतानंत चौबीस तीर्थंकरों ने बिहार में भ्रमण किया। जैन श्रमण संस्कृति में बिहार प्रांत का विशेष स्थान है।

☐ जैन मुनियों को मृत्यु से नहीं लगता है डर

कोरोना काल के बाद आगे की यात्रा क्या चुनौती भरी हो सकती है। इस संकट को किस तरह पार कर सके इस पर उन्होंने कहा कि यदि साधक की साधना पवित्र है तो वह कठिन संकट को भी पार कर सकता है। कोरोना काल में स्वास्थ्य विभाग द्वारा जो भी निर्देश दिए गए वह तो जैन संतों के जीवन में पहले होते हैं। जैसे गर्म पानी, शुद्ध भोजन, साफ-सफाई, योग तो हम योगी है ही। प्राणायाम तो हमलोगों का महामंत्र णमोकार का ध्यान, स्वाध्याय, आराधना चलती रहती है। हमलोगों की चर्या सहज होती है। सम्यक दृष्टि जीव को मृत्यु से डर नही लगता। जहाँ कोरोना काल में भय का माहौल था उस समय हम पूरा संघ निडर अपने साधना में लीन रहा। हम संयम समाधि के लिए मुनि बने है और उसकी साधना चल रही है। हमें कभी महसूस नही हुआ कि मृत्यु से डर लग रहा है। शासन प्रशासन के प्रति आभार जताते हुए कहा कि आसपास के समाज सभी का ध्यान हमारे संघ पर था। आचार्य श्री ने साथ में चल रहे संघपतियों के प्रति भी मंगल आशीर्वाद दिया जिन्होंने अपने घर परिवार से दूर रहकर कोविड संकट में भी 2 महीने मुनियों की सेवा में लगे रहे। इसलिए हमें किसी प्रकार की असुविधा भी महसूस नही हुई।

☐ अंतर्मन की आवाज़ सुखी जीवन के लिए वैशाली में चातुर्मास

लॉकडाउन में 56 दिन एक स्थान पर रुके रहे पर 35 किलोमीटर दूर अपने तीर्थ स्थल पर नहीं गए, इसका जवाब देते हुए आचार्य महाराज ने बताया कि वैशाली से हमलोग यात्रा करके आ चुके थे। वह स्थान शहर और भीड़-भाड़ से बिल्कुल दूर था, वहाँ पर्याप्त मात्रा में स्थान भी थी। साथ ही वैशाली का जो वातावरण था तो हम लोगों को अपने ओर खींच रहा था। हमें ऐसा लग रहा था कि वहीं चलो। सम्मेद शिखर जी व स्थानीय समाज से भी समाचार आया कि शासन की अनुमति लेकर हम संघ का विहार करा सकते हैं। पर हमारे अंतर्मन ने कहा कि आप सुख से जीना चाहते हो तो वैशाली जाओ। यह अंदर की एक आवाज़ थी। तो विकल्प यही निकला कि वैशाली में चातुर्मास सम्पन्न हो और कोरोना की स्थिति सामान्य होते ही शासन की अनुमति से हमारा पूरा संघ चण्डी (नालंदा) से वैशाली की ओर विहार कर गया।

☐ सम्पूर्ण समाज को मैत्री, सद्भावना का संदेश

आचार्य विशुद्ध सागर जी ने अपने लगभग 12 माह की बिहार यात्रा पर उन्होंने कहा कि बिहार तीर्थंकरों की भूमि है ऋषि मुनियों की भूमि है। इस भूमि पर सर्वत्र जैनत्व फैला हुआ है। सभी लोगों को मेरा यही उपदेश है कि सम्पूर्ण समाज मैत्री भाव, आपस में सद्भावना से रहे, धर्म अध्यात्म के साथ एक दूसरे के प्रति सहयोग करे।

☐ परमात्मा किसी को सुख-दुःख नहीं देता

आचार्य श्री ने बताया कि लॉकडाउन के दौरान चंडी में 31 विषयों पर **सत्यार्थ बोध** नामक ग्रंथ का लेखन पूर्ण हुआ। जो आज बहुत बड़ा नीति शास्त्र का ग्रंथ बन चुका है। जिसमें पाश्चात्य संस्कृति से अशांत पथ भ्रमित मानव को अपनी संस्कृति के प्रति चेतना प्रदान कर मानवीय आदर्शों को जागृति प्रदान कर नैतिकतापूर्ण जीवन निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। दूसरा ग्रंथ कर्म सिद्धान्त के ऊपर **कर्म विपाक** नामक ग्रंथ गया में पूर्ण किया गया। जो केशर की स्याही से लिखा गया। जिसका नाम गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में विश्व का प्रथम केशर से लिखा गया ग्रंथ के रूप में दर्ज हुआ। जिसमें

जीव कैसे कर्म करता है, कैसे कर्म के फल को भोगता है, इसके साथ साथ जो लोगों की अवधारणा है कि कोई ईश्वर नाम की वस्तु है जो जीवों को सुख दुःख दे रही है। ये सब विकल्पों को वहाँ दूर किया गया है। परमात्मा किसी को सुख दुख नहीं देता है। हम स्वाधीन हैं जो जैसा कर्म करेगा वैसा फल पाएगा। तीसरा ग्रंथ का शुभारंभ राजगृह में भगवान महावीर स्वामी की प्रथम देशना स्थली विपुलाचल पर्वत पर ताड़ पत्र पर लेखन से किया है।

☐ जैन दर्शन के पास है पुरातात्विक सम्पत्ति

जहां पर प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय का अवशेष है वहां वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर ने 2600 वर्ष पूर्व साधना की। बौद्ध ने भगवान महावीर से प्रभावित स्थान को चुना और उन्होंने वहां पर आकर साधना की। इसलिए दोनों की साधना स्थली को देखकर गुप्तकाल में नालंदा विश्वविद्यालय बना। यहां शैल चित्र, भित्ति चित्र हैं। यदि कोई पूरे राजगृह की वंदना कर लेता और सोन भंडार को जाकर नहीं देखता तो हमारी राजगृह की यात्रा अधूरी रह जाती। किसी भी दर्शन की सुरक्षा साहित्य और पुरातत्व से है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सर्वाधिक पुरातात्विक सम्पत्ति किसी के पास है तो वह जैन दर्शन के पास है। विश्व में अहिंसा का प्रचार हो, इसके लिए प्राचीन धरोहर की रक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है। भारत की सबसे प्राचीन श्रमण संस्कृति है, आर्यों के आने के पहले से ही श्रमण यहां थे।

☐ भगवान महावीर जन्मभूमि को लेकर अलग अलग लोगों की अपनी धारणा

वर्तमान शासन नायक अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की जन्म स्थली के सवाल पर आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी ने बिना कोई अपना मत देते हुए सीधे कहा कि अलग अलग लोगों की अपनी धारणा है। हर तीर्थ स्थान पूजनीय होता है। कल्याणक स्थली को लेकर विभिन्न मत हो सकते हैं पर आराधना तो एक ही होती है। आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने अपने निर्वाण भक्ति में लिखा है भारतवर्ष के विदेह क्षेत्र में कुण्डपुर ग्राम में भगवान महावीर का जन्म स्थान है। अब कुण्डलपुर विदेह क्षेत्र में है उस हिस्से को जानना चाहिए।

☐ विश्व शांति के लिए शाकाहार जरूरी

मानवता की रक्षा करना मानव का धर्म है। प्राणी मात्र की रक्षा करना मानवता है। एक इन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय जीवों के प्रति सद्भावना रहे यही मानवता की पहचान है। कोरोना जैसी बीमारी से सबसे ज्यादा कोई पीड़ित हुए वह मांसाहारी लोग हुए हैं और यह फैला भी मांसाहार से है। अगर विश्व शांति, विश्व मैत्री, विश्व को आनंदमय देखना चाहते हैं तो शाकाहार स्वीकार करना चाहिए। जिनका हृदय क्रूरता से ओत-प्रोत है वही मांस खाते है। जीव रक्षा ही श्रेष्ठ धर्म है।

भारत बने भारत अभियान को सफल बनाने में जुटे युवा

मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में 'भारत बने भारत' अभियान के तत्वाधान में श्री दिगम्बर जैन महासमिति द्वारा ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मातृभाषा सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया गया, कार्यक्रम को रिटायर्ड उप जिलाधीश ब्रह्मचारिणी विजया दीदी व राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष शीला डोडिया के कुशल नेतृत्व में किया गया।

इस कार्यक्रम में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री राजेन्द्र के.गोधा, श्रीमती शालिनि बाकलीवाल, श्रीमती सुधा गंगवाल(गुवाहाटी),डॉ. इन्दु जैन(दिल्ली), श्रीमती मधु शाह(कोटा) ने मुख्य अतिथि की भूमिका का निर्वहन किया व श्रीमती मधु पाटनी(अजमेर), श्रीमती चन्द्रकांता जैन, श्रीमती डिम्पल गाड़िया (सूरत), श्रीमती नीलम सुधीर जैन ने कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन किया व चैनरूप श्रीमती रत्नप्रभा जी जैन व श्री अभय सुलोचना जैन(फरीदाबाद) ने सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया तथा श्रीमती वैशाली जैन, श्रीमती नम्रता जैन(गुवाहाटी), श्री नमन जैन(देहरादून), श्रीमती नैनिका कासलीवाल(भिलाई), श्रीमती कृतिका जैन(अमेरिका), डॉ. सोनाली जैन ने उक्त कार्यक्रम का मंगलाचरण किया।

मातृभाषा कार्यक्रम का सम्पूर्ण संचालन श्रीमती अलका जैन(विवेक विहार), श्री अजय जैन मोहनबाड़ी, श्रीमती पूनम तिलक ने किया। साप्ताहिक कार्यक्रम के दौरान सभी प्रतिभागियों को प्रतिदिन मातृभाषा पर आधारित गतिविधियां कराई गई जिनमे मुख्य है मातृभाषा पर आधारित प्रश्न मंच, काव्य पाठ, संगीत व नृत्य प्रतियोगिता, नारे बनाओ प्रतियोगिताभारत के अनेक रंग-आपके संग व अपनी मातृभाषा पर दृश्यांक इन सभी कार्यक्रमों में सम्पूर्ण भारत देश के प्रतिभागियों ने भाग लिया व अपनी मातृभाषा के प्रति अपने दायित्व को निभा कर आचार्य श्री के सपने को साकार करने में अपना योगदान दे कर कार्यक्रम को सफल बनाया। साप्ताहिक कार्यक्रम में आयोजकों द्वारा 21 विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में

आचार्य शांति सागर स्मारक एवं अष्ट त्यागी निषधि स्थल का लोकार्पण

दिनांक 5 मार्च 2021 का दिन कर्नाटक के बेलगाम के जैन इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा। 5 मार्च को बेलगाम स्थित माणिक बाग दिगम्बर जैन बोर्डिंग में बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बराचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की अक्षुण्ण परंपरा के पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य एवं सम्पूर्ण भारतवर्ष से पधारे हजारों श्रावकों की उपस्थिति के मध्य नव निर्मित शांतिसागर स्मारक, त्यागी निषधि, पुस्तकालय आदि का लोकार्पण हुआ और संध्याकाल की बेला में आचार्य संघ का मंगल विहार श्री क्षेत्र महावीर जी (राजस्थान)के लिए हुआ।

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज का वर्ष 2020 का चातुर्मास बेलगाम के माणिकबाग दिगम्बर जैन बोर्डिंग में सम्पन्न हुआ था। चातुर्मास के दौरान संघ के 3 मुनि महाराज - मुनि श्री सहिष्णु सागर जी,मुनि श्री देवकांत सागर जी, मुनि श्री देवप्रभ सागर जी एवं आर्यिका श्री श्रेय मति जी, आर्यिका श्री दिव्य मति जी, आर्यिका श्री पूर्वी मति जी, आर्यिका श्री प्रशमित मति जी की उत्कृष्ट यम, नियम सल्लेखना बेलगाम में एवं चर्यामति जी की समाधि बस्तवाड में सम्पन्न हुई।

दक्षिण भारत जैन सभा और बेलगाम समाज ने आचार्य संघ के समक्ष बोर्डिंग के जीर्णोद्धार और समाधि साधकों की निषधि बनाने का विचार रखा। आचार्य श्री की प्रेरणा से दक्षिण भारत जैन सभा, बेलगाम समाज, आचार्य शांति सागर फाउंडेशन एवं दातारों के सहयोग से अति अल्प समय मे बोर्डिंग का जीर्णोद्धार हुआ और आचार्य शांति सागर स्मारक, पुस्तकालय, वृत चित्र दीर्घा और निषधि का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री के मंगल सान्निध्य में 5 मार्च 2021 को भव्य लोकार्पण कार्यक्रम रखा गया जिसमें सम्पूर्ण भारत से श्रद्धालु गण पधारे।

सुबह 8:30 बजे से आचार्य संघ के मंगल सान्निध्य में आचार्य शांति सागर फाउंडेशन के ट्रस्टीगण की मीटिंग श्री अशोक जी पाटनी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सभा के दौरान श्री अनिल जी सेठी ने फाउंडेशन के द्वारा किये गए विभिन्न कार्यों की जानकारी दी और तत्पश्चात फाउंडेशन के पदाधिकारियों का चयन किया गया।

दोपहर 12.15 बजे से लोकार्पण का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम दक्षिण भारत जैन सभा चित्रावली का उद्घाटन दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्ष श्रीमान राव साहब दादा पाटिल एवं जनप्रतिनिधि श्री संजय जी पाटिल द्वारा किया गया। महामना आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के चरणों की पूजा एनारपुरा के भट्टारक स्वामीजी द्वारा की गई। नव निर्मित ध्यान केंद्र का लोकार्पण पुण्यार्जक श्री शांतिलाल जी कांतिलाल जी जावेरी परिवार द्वारा किया गया। महामना आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन आचार्य शांति सागर फाउंडेशन के ट्रस्टीगण द्वारा किया गया। नव निर्मित चित्र दीर्घा और शांतिशाला का लोकार्पण दानवीर भामाशाह श्री अशोक जी पाटनी , श्री राजेंद्र जी कटारिया , दक्षिण भारत सभा के अध्यक्ष श्रीमान राव साहब दादा पाटिल, चेयरमैन श्री राव साहब, श्री अनिल जी सेठी आदि महानुभावों द्वारा किया गया। लाइब्रेरी का उद्घाटन श्री सुमन जी बेलगाम द्वारा किया गया। निषधि का लोकार्पण श्रीमती तारादेवी सेठी , मुकेश जी नीलम जी सेठी , राजेश जी राकेश जी सेठी एवं श्यामलाल जी गोदावत द्वारा किया गया। निषधि के समक्ष बने अति सुंदर बगीचे का उद्घाटन श्री भागचंद जी सुनीता जी चूड़ीवाल द्वारा किया गया।

लोकार्पण के पश्चात् आचार्य संघ की विदाई समारोह की सभा का शुभारम्भ हुआ। सभा का मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन जनप्रतिनिधि श्री संजय जी पाटिल, आचार्य शांति सागर फाउंडेशन के ट्रस्टीगण, श्री अशोक जी पाटनी, श्री राजेंद्र जी कटारिया, श्री विवेक जी काला, श्री सुभाष जी जैन, श्री सुरेंद्र जी ठोल्या, दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्ष श्री राव साहब, श्री अनिल जी सेठी, श्री सुरेश पाटिल, श्री जमनालाल जी हपावत, श्रीपाल जी गंगवाल आदि द्वारा किया गया। श्री विनोद जी डोडन्नावर ने स्वागत भाषण पढ़ा और सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। सभा के दौरान उन सभी डॉक्टर्स , चिकित्सक , सहयोगियों का अभिनंदन किया गया जिन्होने कोरोना काल के समय में संघ की विशिष्ट सेवा वैयावृत्ति की। महामना आचार्य शांति सागर जी महाराज एवं

चरित्र पर कन्नड़ में लिखित पुस्तक " धर्म साम्राज्य नायक" और उसके मराठी अनुवाद का विमोचन किया गया। श्री क्षेत्र महावीरजी की ओर से पधारे मस्तकाभिषेक महोत्सव समिति के शिरोमणि संरक्षक श्रीमान अशोक जी पाटनी, श्री विवेक जी

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज की भव्य पूजन उपस्थित महानुभावों द्वारा की गई।

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के पाद प्रक्षालन के पश्चात् आचार्य शांति सागर फाउंडेशन द्वारा श्री विनोद जी डोडन्नावर, श्री पुष्पक जी हनमन्नावर , राजू जी जक्कन्नावर, अभिनन्दन जी जब्बन्नावर एवं अप्पा साहेब इन पांच विशिष्ट व्यक्तियों का उनके परिवार सहित उनकी पिछले २ वर्षों से अधिक निश्चल, निष्काम, निस्वार्थ सेवा के लिए विशेष अभिनंदन किया गया। श्री राकेश जी सेठी ने मंच संचालन करते हुए बताया की जिस तरह की सेवा, वैयावृत्त पांचों व्यक्तियों द्वारा की गयी है वो इस पंचम काल में दुर्लभ है। बीजापुर सहस्र फणि पार्श्वनाथ मंदिर ट्रस्ट द्वारा भी इन सभी का सम्मान किया गया। परम पूज्य जगद्गुरु स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के प्रतिनिधि के रूप में पधारे श्री विनोद जी बाकलीवाल ने आचार्य संघ को श्रीफल भेंट किया और स्वामीजी के संदेश को बताया। किशनगढ़ से एक हवाई जहाज भर कर भक्त गण आचार्य संघ को विहार करवाने हेतु बेलगाम पधारे हुए थे। बीजापुर जैन समाज, इचलकरणजी जैन समाज, किशनगढ़ जैन समाज ने आचार्य संघ के श्री चरणों में श्री फल भेंट किया। श्री अशोक जी पाटनी ने आचार्य संघ के समक्ष निवेदन करते हुए कहा "हे आचार्य भगवन, समस्त राजस्थान आपके चरणों की रज को पाने को लालायित है और सन २०२१ और २०२२ का चातुर्मास आप किशनगढ़ में ही करें ऐसी हमारी भावना है।" जन प्रतिनिधि श्री संजय जी पाटिल ने कहा की साधु बहते निर्मल जल की तरह है उन्हें कोई कहीं नहीं रोक सकता और जैन धर्म अपने अहिंसा और सत्य के सन्देश से उत्तर और दक्षिण, पूरब और पश्चिम सबको एक साथ जोड़कर रखता है। सभा के मध्य आचार्य शांति सागर जी महाराज के जीवन

काला, श्री सुभाष जी जैन, श्री अनिल जी सेठी , श्री सुरेश जी सबळावत, श्री राकेश जी सेठी , श्री अशोक जी सेठी आदि ने आचार्य संघ को श्री महावीर जी की ओर विहार करने हेतु श्री फल भेंट कर निवेदन किया।

सभा के अंत में आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज ने समस्त बेलगाम समाज को उनकी भक्ति और सेवा के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य श्री ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा की श्री विनोद जी डोडन्नावर, श्री पुष्पक जी हनमन्नावर, राजू जी जक्कन्नावर, अभिनन्दन जी जब्बन्नावर एवं अप्पासाहेब इन पांच व्यक्तियों ने अति विशिष्ट सेवाएं देकर समस्त बेलगाम समाज का नाम पुरे भारत में ऊँचा किया है। आचार्य श्री ने कहा की बेलगाम से श्री महावीर जी की दूरी बहुत अधिक है फिर भी संघ २०२२ के महामस्तकाभिषेक में सान्निध्य प्रदान करने हेतु धीरे धीरे विहार करते हुए अपने गंतव्य तक पहुंचेगा।

केंद्रीय पर्यटन राज्यमंत्री ने किए गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन

पर्यटन एवं तीर्थ स्थलों के भ्रमण को आये केन्द्रीय राज्य पर्यटन मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल एवं सांसद राजेन्द्र अग्रवाल ने जम्बूद्वीप रचना की संप्रेरिका गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी के दर्शन किये एवं हस्तिनापुर तीर्थ विकास की चर्चा की एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माता के द्वारा मंत्री ने जैन साहित्य प्राप्त किया।

संस्थान के मंत्री श्री विजय जैन ने मंत्री को जम्बूद्वीप का प्रतीक बिल्ला लगाकर स्वागत किया। पूज्य माताजी के दर्शन करके अत्यंत ही अभिभूत माननीय मंत्री ने कहा कि हम शीघ्र ही यथासंभव प्रयास करके हस्तिनापुर के विकास की बात राज्य एवं केन्द्र सरकार से करेंगे।

आर्यिकाश्री पूर्णमती माताजी का ढाना में शुभागमन

सागर । कुंडलपुर से बिहार कर ढाना पहुंची आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका श्री पूर्णमति माताजी की भव्य अगवानी की गई। हवाई पट्टी से ढाना ग्राम तक अनेक स्थानों पर माता जी की का पादप्रच्छालन किया गया और आरती उतारी गई इस अवसर पर बैनर पोस्टरों के द्वारा नगर में सात सज्जा की गई थी, अखाड़े बैंड बाजे आदि के बीच ठीक 8 बजे माता जी की अगवानी जैन मंदिर के सामने हुई। इस अवसर पर माताजी ने दोनों जिनालयो में पहुंचकर श्री जी के दर्शन किए। संक्षिप्त उद्बोधन में माताजी ने कहा गांव के लोग शहर की तरफ, शहर के लोग महानगरों की तरफ और महानगरों की लोग विदेश की तरफ जा रहे हैं यह उलटी गंगा बह रही है लोग बाहर जा रहे हैं। जबकि ढाना में सीधी गंगा बह रही है यहाँ पर सब की दृष्टि देहात की ओर है, आचार्य भगवन कहते हैं कि जो आनंद देहात में हैं जो खुशहाली देहात में है देहात यानी गांव में है, वैसी शहरों में दुर्लभ है। देहात में ही हाथ से हाथ मिला कर कार्य किया जा रहा है, वह देखने योग्य है। माताजी ने सभी से कहा इस सिद्धचक्र महामंडल विधान में सिद्धों की आराधना होगी और प्रभु की भक्ति मैं जैन और अजैन समूचा ग्राम इसमें भाग ले।

25 फरवरी २०२१ से 4 मार्च २०२१ तक सागर जिले के ग्राम ढाना में हुए सिद्धचक्र महामंडल विधान में पात्रों का चयन आचार्य विद्यासागर महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका पूर्णमति माताजी के सान्निध्य में संपन्न हुआ था।

सौधर्म इंद्र कैलाशचंद जैन मुनीम, मनोज जैन ढाना, विनीता जैन, नेहा नगर मकरोनिया, चक्रवर्ती माखनलाल सचिन कुमार ज्योति जैन ,श्रीपाल-मैना सुंदरी मुकेश जैन ढाना श्रीमती संगीता जैन, द्रव्य भेंट कर्ता डॉ रमेश जैन उषा जैन,

कुबेर अतुल जैन प्रतिभा जैन, महायज्ञ नायक ज्ञानचंद जैन धनीराम जैन, ध्वजारोहणकर्ता नंदन जैन नीरज जैन,ईशान इंद्र राजेश संध्या बजाज , सानत इंद्र राकेश जैन अनीता जैन, माहेंद्र उदय चंद जैन श्रीमती उषा श्रावक श्रेष्ठी सुनील जैन नीतू जैन मनाली साड़ी, यज्ञ नायक शशिकांत जैन अर्चना जैन, यज्ञ नायक इंजी राकेश जैन ऋतु जैन। अष्ट कुमारी प्रथम रक्षा जैन दीपक जैन,आर्ची जिया, मनाली जैन ढाना,सेजल जैन, नैंसी जैन, राजुल जैन, सुरभि जैन, गुनगुन जैन, नेहल जैन, तन्वी जैन, स्तुति जैन बनी।

विधान में बना पंचकल्याणक जैसा वातावरण

ढाना। विद्या गुरु के चरण जिस धरती पर पड़ते हैं, वह चंदन बन जाती है। वैसे भी गुरु के बिना कोई काम शुरू नहीं होता है। सिद्धचक्र विधान कराने से अनंत कर्मों की निर्जरा होती है, यह बात विधान के समापन अवसर पर हवन के बाद परम विदुषि, मृदुभाषिणी, अद्वितीय कवयित्री आर्यिका पूर्णमति माताजी ने सागर जिले की सैनिक छाबनी ढाना में विधान के सम्पन्न होने के अवसर पर अपने प्रवचनों में कही। उन्होंने कहा कि आचार्य श्री ने नेमावर से सिद्धचक्र विधान के लिए आशीर्वाद के साथ- साथ ऊर्जा भी भेजी थी । जिस कार्य में आचार्य श्री का आशीर्वाद होता है वह कार्य हमेशा सफल होता है। उन्होंने कहा कि सब जीवों के पुण्य का भाव था इसलिए ढाना में बीस घर की जैन समाज होते हुए विधान नहीं पंचकल्याणक जैसा वातावरण बन गया।

नेमावर में गुरु दर्शन

नेमावर में गुरु दर्शन किए साथ ही वहाँ के मंदिरों की जो आभा देखी, सोच कर लगता कि कितना भव्य और आत्मिक शांतिदायक होगा, जैन धर्म की पताका, हजारों सालों के लिए लहराएगी।

मैं संजय मैक्स जी अध्यक्ष, सुरेश काला कार्याध्यक्ष, महेन्द्र अजमेरा कोषाध्यक्ष, सहस्हकुट निर्माण विशेष सहयोगी राजा भाई सुरत, निर्माण कमेटी के सदस्य श्री भरतेश बड़कुल, इंदौर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संचालक श्री सुरेश जी सोनी एवं समस्त सहयोगी सदस्यों की लगन और कार्य की तारीफ कैसे करुँ ..पर कुछ शब्द कहना चाहता हूँ आप सभी के सामने....

जब पंचम काल के भगवान का काल चल रहा हो और जुड़ कर हमें कुछ कार्य करने का अवसर मिले तो उसे सौभाग्य और शुभकर्मोदय ही मानें। आप उनमें से एक हो। आपका कार्य देख कर आश्चर्य चकित होकर शब्दातीत हो जाता हूँ। समाज मे कार्य करना बहुत ही कठिन विषय है। सहनशीलता बहुत चाहिए...पर आपकी लगन देख प्रेरणा मिलती है ...गुरु जी के सपनों को साकार होता देख और आपकी मेहनत को एक ऐसे पंचकल्याणक के रूप मे देखेंगे, जो आगे की पीढ़ीयों को कहानीयों में सुनाया जाएगा...और जैन धर्म का प्रचार प्रसार इस तरह हो कि पुनः भरत का भारत बन जाए...जैन समाज का एक भी सदस्य ना छूटे ...जिसे कि नेमावर के दर्शन का सौभाग्य ना मिले।

- सीए. खुशाल जैन, मुम्बई

आचार्य कुंदकुंद की जन्मभूमि कोनाकोंडला (आंधप्रदेश) के विकास के लिए देशभर के जैन समाज से अपील

तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रस्तावित योजना में सहभागी बनें

श्रुतधर आचार्य की परम्परा में कुन्दकुन्दाचार्य का स्थान महत्वपूर्ण है। इनकी गणना ऐसे युगसंस्थापक आचार्यों के रूप में की गयी है, जिनके नाम से उत्तरवर्त्ती परम्परा कुन्दकुन्द-आम्नाय के नाम से प्रसिद्ध हुई है। किसी भी कार्य के प्रारम्भ में मंगलरूप में इनका स्तवन किया जाता है। जिस प्रकार भगवान महावीर, गौतम गणधर और जैनधर्म मंगलरूप हैं, उसी प्रकार कुन्दकुन्द आचार्य भी मंगलरूपी हैं। इन जैसा प्रतिभाशाली आचार्य और द्रव्यानुयोग के क्षेत्र में प्रायः दूसरा दिखलाई नहीं पड़ता।

कुन्दकुन्द भगवान की जन्म भूमि कोनाकोंडला जिसे आज सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध होना चाहिए था आज यह स्थान समाज से विलुप्त सा प्रतीत होता दिखाई दे रहा है।

जैन धर्म को जन-जन तक को पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले हमें अनेकों ग्रन्थ प्रदान करने वाले जिसकी वजह आज हम भगवान जिन की वाणी और जैन धर्म को जान पा रहे, उनके उपेक्षित पड़े जन्म स्थान को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी विकसित करने का कार्य कर रही है और इस कार्य को पूर्ण करने के लिए समस्त समाज का सहयोग अति आवश्यक है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी देश-विदेश की समाज से अपील करती है कि हमारे आचार्यों में सबसे प्रमुख आचार्य कुन्दकुन्द भगवन के जन्म स्थान कोनाकोंडला (आंधप्रदेश) के विकास के लिए तन-मन धन से तीर्थक्षेत्र कमेटी का सहयोग करें।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इस वर्ष पहाड़ के वृक्षारोपण का कार्य शुरू किया है, तमिलनाडु की भांति आंधप्रदेश में प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के आसपास के मुख्य-मार्गों, राजमार्गों पर क्षेत्र का नाम व दूरी दर्शाने वाले बोर्ड लगाए गए हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने कोनाकोंडला विकास के लिए आरंभिक रूप से 2 करोड़ व्यय करके विकास की योजना बनाई है जिसके लिए आप मुक्त हस्त से दान कर इस इतिहासिक कार्य के लिए विभिन प्रकार से सहभागी बन सकते है-

- कोनाकोंडला में एक दिगंबर जैन मंदिर व भव्य स्मारक का निर्माण होना है, मंदिर निर्माण कार्य में आप सहयोगी बन सकते हैं।
- तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए एक धर्मशाला का निर्माण कार्य होना हैं, एक कमरे की सहयोग राशि 5,01,000/- रु. है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अपील

तीर्थक्षेत्रों और शहरों की धर्मशालाओं को Dharmashala.in से जोड़ें

आज डिजिटल माध्यम को प्राथमिकता देते हुए सब कुछ ऑनलाइन होता जा रहा है, बिजली बिल भुगतान से लेकर विमान का टिकट तक व्यक्ति कम समय से घर बैठे आसानी से बुक कर रहा है। लेकिन अपने तीर्थक्षेत्रों में अभी तक इस प्रकार की सुविधा को चालू नहीं की गयी है, इसी बात को ध्यान में रखते हुए तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण की दिशा में भारतवर्षीय दिगबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने तीर्थक्षेत्रों और शहरों मे स्थित धर्मशालाओ को जोड़ने के लिए एक मंच तैयार किया है जिसका नाम है: "धर्मशाला.इन"।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इस योजना को देश-विदेश में पहुँचाने की योजना बनाई है अभी तक भारत के सभी छोटे-बड़े तीर्थों एवं विभिन्न शहरों से संपर्क कर वहां पर स्थित धर्मशालों की जानकारी एकत्रित की जा रही है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी भारत के सभी तीर्थक्षेत्रों व शहरों में स्थित धर्मशालों के पदाधिकारियों/ ट्रस्टियों एवं देश-विदेश की सामज से अपील करती है कि देशभर की सभी जैन धर्मशालाओं को जोड़ने वाली इस योजना Dharmashala.in से जुड़ें और जुड़ने वाली सभी संस्थाओं को तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से टेबलेट, धर्मशाला प्रबंधन सोफ्टवेयर तथा एलईडी बोर्ड निःशुल्क दिया जायेगा ।

- इस योजना मुख्य प्रायोजक के लिए 5,01,000/-रु., सह-प्रायोजक 1,51,000/- रु (कुल 5) एवं साधारण प्रायोजक 51,000/- (कुल 5) का दान कर सहभागी बन सकते हैं।
- इस योजना के अंतर्गत प्राम्भिक रूप से प्रत्येक तीर्थक्षेत्र पर एक-एक धर्मशाला के नाम का एलईडी बोर्ड लगाया जाएगा है, 5100/- रु. की दान राशि प्रदान कर सहभागी बन सकते हैं।

यदि आपको इस संबंध में किसी प्रकार अतिरिक्त जानकारी या तकनीकी सहायता की आवश्यकता हो तो श्री निखिल जैन व उनकी टीम से 090211-95528 पर संपर्क कर सकते हैं।

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019-21
Jain Tirth vandana, English-Hindi March 2021
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by **UMANATH RAMAJOR DUBEY** on behalf of **BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE**, Printed at **TRIMURTI PRINTERS**, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : **UMANATH RAMAJOR DUBEY**